GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

H

Class No. 491.435

Book No. E93

N. L. 38.

MGIP Santh.—S1—30 LNL/58—9-4-59—50,000.

भाषा भास्कर।

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण।

काशी नगर के पादरी एथरिङ्गटन साहिब ने
विद्यार्थियों की शिक्षा निमित्त
बनाया

यामुहि शीश नवाइ के कियो नयो यह ग्रन्थ।
भाषा भास्कर याहि लखि लखें लोग पद पन्थ॥

BHÁSHÁBHÁSKAR.

A GRAMMAR

OF THE

HINDI LANGUAGE.

DESIGNED FOR NATIVE STUDENTS,

BY THE

REV W. ETHERINGTON,

Missionery, Benares

श्रीयुतडाइरक्टरपब्लिकइन्स्ट्रक्शन ममालिकमगरबी शिमाली
व अवधकी आज्ञानुसार मदर्सोंकेलिये इलाहाबाद
गवर्नमेण्टप्रेसमें छापागया

वही

श्रीमान्डाइरक्टरपब्लिकइन्स्ट्रक्शनममालिकमगरबीशिमाली
व अवधकी इजाज़तसे विद्यार्थियोंके लाभके लिये

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके छापेखानेमें छापागया

जूलाई सन् १८८६ ई०

ऐक्ट २५ सन१८६७ ई० के अनुसार रजिस्टरी हुई

NATIONAL LIBRARY
No. 2003
Date 1.1.55

PREFACE TO THE FIRST EDITION.

"The Student's Grammer of the Hindí Language," published by me last year, was reviewed by the Director of Public Instruction, North-Western Provinces, and recommended to Government for a prize. "Being a work in the English language, it hardly comes wrthin the scope of the Prize Notification, which relates only to vernacular literature;" but His Honor the Lieutenant-Governor suggested that the book, if put into a form suitable for use in vernacular education, "would be a valuable cotribution to the vernacular literature, and, as such, a fit subject for a prize"* In accordance with his suggestion, the little book in the hands of the reader was prepared.

Being disigned for native youth, this is not a mere translation of the "Student's Hindí Grammer," which would not have served the purpose, that book being adapted to the wants of Europeans having no knowledge of the Indian dialects. In the following pages the reader will find much that is new, as regards both matter and arrangement, in every chapter, especially in the treatment of the noun and the verb. I have taken advantage of the criticism of scholars who reviewed the former book here and in England, and have felt it necessary to omit or to modify some points that I formerly held as correct. In several instances I have ventured to differ from well-known Hindí scholars; but in no case hastily, or without being, as I supposed, justified by what seemed to me to be the facts of the case.

I have read whatever came in my way that seemed likely to aid me in the preparation of the book, and have made use of whatever promissed to afford help to Native students in acquiring a competent knowledge of the structure of their mother-tongue. I am in a great measure indebted to the advice and suggestions of the accomplished Pandit Vishan Datt, who prepared the greater part of the last chapter and revised the entire book with me.

BENARES,
October, 1871,

W. ETHERINGTON.

* A prize of five hundred rupees was awarded to the author on the appearance of the first edition of this book. The copyright of this second and improved edition has been purchased by Government.

सूचीपत्र।

	पृष्ठ
प्रथम अध्याय—वर्णविचार	१
स्वरों के विषय में	२
व्यंजनों के विषय में	३
संयुक्त व्यंजन	४
उच्चारण के विषय में	५
स्वरचक्र और व्यंजनचक्र	७
द्वितीय अध्याय—संधिप्रकरण	८
१ स्वरसंधि	"
दीर्घ	"
गुण	९
वृद्धि	१०
यण्	११
अयादि	१२
स्वरसंधिचक्र	१३
२ व्यंजनसंधि	"
३ विसर्गसंधि	१७
तृतीयअध्याय—शब्दसाधन	१९
स्त्रीलिङ्गप्रत्यय	२३
संज्ञा कारूपकरण	२७
गुणवाचकके विषयमें	३६
चौथाअध्याय—सर्वनामों के विषय में	३८
पुरुषवाचीसर्वनाम	"
निश्चयवाचक "	३९
अनिश्चयवाचक "...	४१
आदरसूचक "	"
प्रश्नवाचक "	४३
सम्बंधवाचक "	४४
पांचवांअध्याय—क्रिया के विषयमें...	४५
क्रिया का संपूर्ण रूप	४८

सूचीपत्र ॥

क्रियाकेबनानेकीरीति	...	...	[illegible]
क्रियाचक्र	...	...	[illegible]
संयुक्तक्रिया	...	...	[illegible]
छठवां अध्याय—कृदन्तकेविषयमें ...	...	...	[illegible]
सातवां अध्याय—कारक " ...	...	...	[illegible]
आठवां अध्याय—तद्धित " ...	...	...	[illegible]
नवां अध्याय—समास " ...	...	...	[illegible]
दशवां अध्याय—अव्यय " ...	...	...	८
१ क्रियाविशेषण ...	...	...	
२ सम्बंध सूचक ...	...	...	[illegible]
३ उपसर्ग	...	...	[illegible]
४ संयोजक	...	...	९१
५ विभाजक	...	...	[illegible]
६ विस्मयादिबोधक ...	...	...	[illegible]
ग्यारहवां अध्याय—वाक्यविन्यास	...	...	९२
पदयोजनका क्रम ...	...	...	[illegible]
विशेष्यऔरविशेषण	...	...	[illegible]
कर्तृप्रधानवाक्य ...	...	...	[illegible]
कर्मप्रधानवाक्य ...	...	...	[illegible]
बारहवांअध्याय—छन्दोनिरूपण ...	...	...	[illegible]

भाषाभास्कर

अर्थात

हिन्दी भाषाका व्याकरण ॥

अथ प्रथम अध्याय ॥

१ भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा बोलकर मनुष्य अपने मनके विचार का प्रकाश करता है ॥

२ व्याकरण के बिन जाने शुद्ध२ बोलना वा लिखना किसीभाषा का नहीं होता ॥

३ उस विद्या को व्याकरण कहते हैं जिससे लोग बोलने और लिखने की रीति सीख लेते हैं ॥

४ भाषा वाक्यों से बनती है वाक्य पदों से और पद अक्षरों से बनाये जाते हैं ॥

५ व्याकरण में मुख्य विषय तीन हैं जो अक्षरों से पदों से और वाक्यों से सम्बन्ध रखते हैं ॥

६ पहिला विषय वर्ण विचार है जिसमें अक्षरों के आकार उच्चारण और मिलने की रीति बताई जाती है ॥

७ दूसरा विषय शब्दसाधन है जिसमें शब्दों के भेद अवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन है ॥

८ तीसरा विषय वाक्यविन्यास है उसमें शब्दों से वाक्य बनाने की रीति बताई जाती है ॥

प्रथम विषय—वर्णविचार ॥

९ हिन्दीभाषा जिनअक्षरोंमें लिखीजातीहै वे देवनागरीकहातेहैं ॥

१० शब्दके उसखण्डका नामअक्षरहै जिसकाविभाग नहीं होसकता और उसके चीन्हनेकेलिये जो चिन्हबनायेगये हैं वे भीअक्षरकहातेहैं ॥

११ अक्षर दो प्रकारके होतेहैं स्वर और व्यंजन और इन्हीं दोनों [illegible] को वर्णमाला कहते हैं ॥

१२ स्वर उन्हें कहते हैं जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायकहोते हैं और जिनका उच्चारण आप से होता है ॥

१३ व्यंजन उन वर्णों को कहते हैं जिनके बोलने में स्वर की सहायता पाई जाय ॥

स्वर ।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ* ए ऐ ओ औ

व्यंजन ।

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व
श ष स ह

१४ व्यंजनों का स्पष्ट उच्चारण स्वर के योगसे होता है जैसाक्+अ=क ख्+अ=ख इत्यादि । और जब क आदि व्यंजनों में स्वर नहीं रहता तो उन्हें हल् कहतेहैं और उनकेनीचे ऐसा चिन्ह करदेतेहैं ॥

किसी अक्षर के आगेकारशब्द जोड़नेसेवही अक्षर समझा जाताहै ॥

१५ अनुस्वार और विसर्गभी एकप्रकारके व्यंजन हैं । अनुस्वारका उच्चारणप्रायः हल् नकारके समान और विसर्गकाहकारकेतुल्यहोताहै ॥

१६ अनुस्वार का आकार स्वरकेऊपर की एक बिन्दी और विसर्ग कास्वरूप स्वरके आगे की खड़ी दो बिन्दियां हैं । अनुस्वार जैसे हंस बंश में विसर्ग जैसे प्रायः दुःख इत्यादि में है ॥

स्वर के विषय में ॥

१७ मूलस्वर नवहैं उनके स्वरूप ये हैं अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ । इनमेंसे पहिले पांच ह्रस्व और पिछले चार दीर्घ और संयुक्त भी कहाते हैं । संयुक्त कहने का अर्थ यह है कि अ + इ= ए आ + ई=ऐ अ + उ = ओ और आ + ऊ = औ ॥

१८ अकार के बोलने में जितना समय लगता है उसेही मात्रा कहते हैं । जिस स्वरके उच्चारण में एक मात्रा होवे उसे ह्रस्व वा एक

* ऋ ॠ ऌ ॡ येवर्ण हिन्दी शब्दों में नहीं आते केवल देवनागरी वर्णमाला की पूर्णता निमित्त रक्खे गये हैं ॥

मात्रिक कहते हैं और जिनके बोलने में इसका दूना काललगे वे दीर्घ अथवा द्विमात्रिककहाते हैं। जैसे अ इ उ ऋ ऌ ये ह्रस्व वा एकमात्रिकहैं।

आ ई ऊ ॠ ॡ ए ऐ ओ औ ये दीर्घ वा द्विमात्रिक हैं।

ए ऐ ओ औ ये दीर्घ और संयुक्त भी हैं॥

१९ जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व के उच्चारण से तिगुना काल लगता है उसे प्लुत वा त्रिमात्रिक कहते हैं और उसका प्रयोजन हिन्दी भाषा में थोड़ा पड़ता है केवल पुकारने और चिल्लाने आदि में बोला जाता है। उसके पहचानने को दीर्घ के ऊपर तीनका अंक लिखदेते हैं। जैसे हे मोहना ३ यहां अंत्य स्वरको प्लुत बोलते हैं॥

२० अकार आदि स्वर जब व्यंजन से नहीं मिलेरहते तबउन्हें स्वर कहते हैं और वे पूर्वोक्त आकार के अनुसार लिखेजाते हैं परन्तु जब ककार आदि व्यंजनों से मिलते हैं तो इनका स्वरूप पलटजाता है और ये मात्रा कहातेहैं। प्रत्येक स्वर के नीचे उसकी मात्रालिखीहै॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	ॢ	ॣ	े	ै	ो	ौ

व्यंजनों के विषय में॥

२१ सम्पूर्ण व्यंजनों के सात विभाग हैं। वर्णमाला के क्रमके अनुसार ककार से लेकर मकार लों जो पचीस व्यंजनहैं जिन्हें संस्कृत में स्पर्श कहतेहैं उनमें पांचवर्ग होते हैं और शेष आठ व्यंजनों के दो भाग हैं अर्थात अन्तस्थ और ऊष्म। जैसे।

क	ख	ग	घ	ङ	यह	क—वर्ग	है॥
च	छ	ज	झ	ञ	,,	च—वर्ग	,,
ट	ठ	ड	ढ	ण	,,	ट—वर्ग	,,
त	थ	द	ध	न	,,	त—वर्ग	,,
प	फ	ब	भ	म	,,	प—वर्ग	,,
य	र	ल	व		ये अन्तस्थ हैं॥		
श	ष	स	ह		ये ऊष्म हैं॥		

प्रयत्नके अनुसार व्यंजनोंके दो भेदहोतेहैं अर्थात अल्पप्राण [redacted] महाप्राण। प्रत्येक वर्गके पहिले और तीसरे अक्षरोंकोअल्पप्राणऔर

दूसरे और चौथेको महाप्राण कहतेहैं। जैसे कवर्गमें क ग अल्पप्राण और ख घ महाप्राण हैं। इसीप्रकार से चवर्ग आदि में भी जानो। जैसे

अल्पप्राण।	महाप्राण।
क ग	ख घ
च ज	छ झ
ट ड	ठ ढ
त द	थ ध
प ब	फ भ

२३ रकार और ऊष्म को छोड़कर शेष अक्षरों के भी दो और भेद हैं सानुनासिक और निरनुनासिक। जिनका उच्चारण मुख और नासिका में होताहै उन्हें सानुनासिक कहते हैं और जो केवल मुखसे बोले जातेहैं वे निरनुनासिक कहाते हैं॥

२४ वर्णोंके शिरपर ऐसा ँ चिन्ह देनेसे सानुनासिक होताहै परन्तु भाषामें प्रायः अनुस्वार ही लिखाजाता है और निरनुनासिकका कोई चिन्ह नहीं है॥

२५ प्रत्येकवर्गके पांचवेंवर्णको सानुनासिक अल्पप्राण कहतेहैं। जैसे

ङ ञ ण न म

२६ जब व्यंजनके साथ मात्रा मिलायी जातीहै तब व्यञ्जन का आकार मात्रा सहित होजाता है। जैसे

क का कि की कु कू कृ कॄ क्लृ क्लॄ के कै को कौ

इसीरीति ख आदि मिलाकर सबव्यञ्जनों में जानो। परन्तु जब उ वा ऊ कीमात्रा र केसाथ मिलाई जातीहै तब उसका रूप कुछ विकृत होता है। जैसे रु रू॥

संयुक्त व्यंजन॥

२७ जब दो आदि व्यञ्जनों के मध्य में स्वर नहीं रहता तब उन्हें संयोग कहतेहैं और वे एकहीसाथ लिखे जाते हैं। जैसे पत्थर इसशब्द में त् और थ का संयोग है॥

२८ बहुधा संयुक्त अक्षरों को लिखावट में मिलेहुए व्यञ्जनों का रूप दिखाई देताहै परन्तु क्ष त्र ज्ञ इनअक्षरों में जिनके संयोगसे इनका

है उनका कुछ भी रूप नहीं दिखाई देता इसलिये कोई कोई व्यंजनोंके साथ वर्णमालाके अंतमें इन्हें लिख देते हैं। क् और ष के मेल से क्ष और त् और र के योग से त्र और ज् और ञ मिलके ज्ञ बनगयाहै ॥

२९ प्रायः संयोगमें आदि के व्यंजनका आधा और अंतके व्यंजन का पूरा स्वरूप लिखा जाताहै। जैसे विस्वा प्यास मन्दिर इत्यादिमें ॥

३० ङ ञ ट ठ ड ढ ये छः व्यंजन ऐसे हैं जो संयोग के आदि में भी पूरे ही लिखे जाते हैं। जैसे चिट्ठी टिड्डी आदि में ॥

३१ रकार जब संयोग के आदि में होता है तब उसके सिर पर लिखा जाता है और उसे रेफ कहते हैं। जैसे पूर्व धर्म आदि में। परंतु जब रकार संयोग के अंतमें आता है तो आदिके व्यंजनके नीचे इस रूपसे लिखा जाता है। जैसे शक्र चक्र मुद्रा आदिमें ॥

३२ हिन्दी भाषा में संयोग बहुधा दो अक्षरों के मिलतेहैं परंतु कभी २ तीन अक्षरों के भी आते हैं। जैसे स्त्री मन्त्री मूर्द्धा इत्यादि ॥

३३ प्रत्येक सानुनासिक व्यंजन अपनेही वर्ग के अक्षरोंसे युक्तहो सकता है और दूसरे वर्ग के वर्णोंके साथ कभी मिलाया नहीं जाता परंतु अनुस्वार बना रहताहै। जैसे पङ्कज चञ्चल घण्टा छन्द थाम्भन गंगा ऊंट इत्यादि ॥

३४ यदि अनुस्वारसे परे कवर्ग आदि रहें तो उसकोभी ङकारआदि सानुनासिक पञ्चम वर्ण करके ङकार आदिमें मिला देते हैं। जैसे अङ्क शान्त इत्यादि ॥

३५ यदि किसी वर्ग के दूसरे वा चौथे अक्षर का द्वित्व होवे तो संयोग के आदिमें उसी वर्ग का पहिला वा तीसरा अक्षर आवेगा जैसे गफ़्फ़ा=गप्फ़ा आदि ॥

३६ संयोगमें जो अक्षर पहिले बोले जातेहैं वे पहिले लिखे जाते हैं और जिनका उच्चारण अंत में होता है उन्हें अंत में लिखते हैं। जैसे शब्द अङ्क अन्त्य इत्यादि ॥

अक्षरों के उच्चारण के विषय में ॥

३७ मुख के जिस भागसे किसी अक्षर का उच्चारण होता है उसी भागको उस अक्षरके उच्चारण का स्थान कहते हैं ॥

३८ अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका उच्चारण कण्ठसे होता है इसलिये ये कण्ठ्य कहाते हैं ॥

३९ इ ई च छ ज झ ञ य श तालु पर जीभ लगानेसे ये सब वर्ण बोले जाते हैं इसलिये ये अक्षर तालव्य कहाते हैं ॥

४० ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष ये मूर्द्धा अर्थात तालु सेभी ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते हैं इसलिये इनको मूर्द्धन्य कहते हैं ॥

४१ चेत रखना चाहिये कि ड और ढ के दो२ उच्चारण होते हैं एक तो यह कि जब इन अक्षरोंके नीचे बिन्दु नहीं रहता तो जीभ का अग्र तालु पर लगातेहैं जैसे डरना डाकू ढाल ढोल इन शब्दों में। इन अक्षरोंके नीचे बिंदु होनेसे दूसरा उच्चारण समझा जाता है इसके बोलने में जीभ का अग्र उलटा करके मूर्द्धासे लगाया जाता है। जैसे बड़ा थोड़ा पढ़ना चढ़ना इन शब्दोंमें ॥ यह भी चेत रखना चाहिये कि अनेक लोग ष का उच्चारण ख के समान कर देतेहैं जैसे मनुष्यको मनुख्य भाषाको भाखा दोषको दोख बोलतेहैं परन्तु यहरीतिअशुद्धहै।

४२ ऌ त थ द ध न ल स ये ऊपर के दन्तों पर जीभ लगाने से उच्चरित होते हैं इसलिये इन अक्षरोंको दंत्य कहते हैं ॥

४३ उ ऊ प फ ब भ म ये ओठोंसे बोले जातेहैं इसलिये इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं ॥

४४ ए ऐ इनके उच्चारण का स्थान कंठ और तालु है इसलिये ये कंठोष्ठ्य कहाते हैं ॥

४५ ओ औ कण्ठ और ओष्ठसे बोले जाते हैं इसलिये ये कंठोष्ठ्य कहाते हैं ॥

४६ व के उच्चारण स्थान दन्त औरओष्ठहैं इसलिये इसे दंत्योष्ठ्य कहते हैं ॥ ब और व ये दो वर्ण बहुधा परस्पर बदल जाते है। संस्कृत शब्दों में जहां ब होता है वहां हिंदी में ब लगाते हैं और कभी२ व की जगहमें ब बोलते हैं पर संस्कृतमें जैसा शब्दहै वैसाही प्रायः हिन्दीमें होना चाहिये ॥

४७ अनुस्वार का उच्चारण नासिका से होता है इसलिये सानुना सिक कहाता है ॥

४८ ङ ञ ण न म ये अपने २ वर्गोंके स्थान और नासिकासे भी बोले जाते हैं इसलिये ये सानुनासिक कहाते हैं ॥

४९ जिन अक्षरों के स्थान और प्रयत्न समान होते हैं वे आपस में सवर्ण कहाते हैं जैसे क और ग का स्थान कंठ है और इनका समान प्रयत्न है इस कारण क ग आपस में सवर्ण कहाते हैं । नीचेके दो चक्रों से वर्णमाला के सब अक्षरोंके स्थान और प्रयत्न ज्ञातहोतेहैं ॥

५० स्वर चक्र

विवृत और घोष प्रयत्न				
स्थान	ह्रस्व	दीर्घ	स्थान	दीर्घ
कण्ठ	अ	आ	कण्ठ + तालु	ए
तालु	इ	ई	कण्ठ + तालु	ऐ
ओष्ठ	उ	ऊ	कण्ठ + ओष्ठ	ओ
मूर्द्धा	ऋ	ॠ	कण्ठ + ओष्ठ	औ
दन्त	ऌ	ॡ		

५१ व्यंजन चक्र

अघोष			घोष					अघोष		
वर्ग	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण सानुनासिक	अल्पप्राण अन्तस्थ	महाप्राण ऊष्म	महाप्राण ऊष्म		स्थान
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ		ह			कण्ठ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	य		श		तालु
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	र		ष		मूर्द्धा
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	ल		स		दन्त
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	व				ओष्ठ

इति प्रथम अध्याय ॥

अथ द्वितीय अध्याय ॥

संधि प्रकरण।

५२ प्रायः प्रत्येक भाषा में कहीं २ ऐसा होता है कि दो अक्षर निकट होने से परस्पर मिल जाते हैं उनके मिलने से जोकुछ विकार होता है उसी को संधि कहते हैं ॥

५३ संस्कृत भाषा में सब शब्द संधि के आधीन रहते हैं और हिन्दी में संस्कृत के अनेक शब्द आया करते हैं उनके अर्थ और व्युत्पत्ति समझने के लिये हिन्दी में संधि का कुछ ज्ञान आवश्यक है।

अब संधि के मुख्य नियम जो हिन्दी के विद्यार्थियोंको कामआवें उन्हें लिखते हैं ॥

५४ संधि तीन प्रकार की है अर्थात स्वरसंधि व्यंजनसंधि और विसर्गसंधि ॥

५५ स्वर के साथ स्वर का जो संयोग होता है उसे स्वरसंधि कहते हैं ॥

५६ व्यंजन अथवा स्वर के साथ व्यंजन का जो संयोग होता है उसे व्यञ्जनसंधि कहते हैं ॥

५७ स्वर और व्यंजन के साथ जो विसर्ग का संयोग होताहै उसे विसर्ग संधि कहते है ॥

१ स्वरसंधि।

५८ स्वरसंधि के पांच भाग हैं अर्थात दीर्घ गुण वृद्धि यण् और अयादि चतुष्टय ॥

१दीर्घ।

५९ जब समान दो स्वर ह्रस्व वा दीर्घ एकट्ठे होते हैं तो दोनों को मिलाकर एक दीर्घ स्वर कर देते हैं। यह बात नीचे के उदाहरण देखने से प्रत्यक्ष हो जायगी ॥

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांती का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पांतीका स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती का स्वर हो जायगा	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	अ	आ	परम + अर्थ =	परमार्थ
अ	आ	आ	देव + आलय =	देवालय
आ	अ	आ	विद्या + अर्थी =	विद्यार्थी
आ	आ	आ	विद्या + आलय =	विद्यालय
इ	इ	ई	प्रति + इति =	प्रतीति
इ	ई	ई	अधि + ईश्वर =	अधीश्वर
ई	इ	ई	मही + इन्द्र =	महीन्द्र
ई	ई	ई	नदी + ईश =	नदीश
उ	उ	ऊ	विधु + उदय =	विधूदय
उ	ऊ	ऊ	लघु + ऊर्मि =	लघूर्मि
ऊ	उ	ऊ	स्वयंभू + उदय =	स्वयंभूदय
ऋ	ऋ	ॠ	मातृ + ऋद्धि =	मातृद्धि

२ गुण।

६० ह्रस्व अथवा दीर्घ अकारसे परे ह्रस्व वा दीर्घ इ उ ऋ रहें तो अ इ मिलकर ए और अ उ मिलकर ओ अ ऋ मिलकर अर् होता है। इसी विकार को गुण कहते हैं। नीचे के चक्रमें इनके उदाहरण लिखे हैं॥

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पंक्ति का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पंक्ति का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पंक्ति का स्वर हो जायगा	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ आ	इ ई	ए ए	देव + इन्द्र =	देवेन्द्र
			परम + ईश्वर =	परमेश्वर

अ	इ	ए	महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ	ई	ए	महा + ईश = महेश
अ	उ	ओ	हित + उपदेश= हितोपदेश
अ	ऊ	ओ	जल + ऊर्म्मि = जलोर्म्मि
आ	उ	ओ	महा + उत्सव = महोत्सव
आ	ऊ	ओ	गंगा + ऊर्म्मि = गंगोर्म्मि
अ	ऋ	अर्	हिम + ऋतु = हिमर्तु
आ	ऋ	अर्	महा + ऋषि = महर्षि

२ वृद्धि ।

६१ ह्रस्व अथवा दीर्घ अकार से परे ए ऐ ओ वा औ रहे तो अ ए वा अ ऐ मिलकर ऐ और अ ओ वा अ औ मिलकर औ होता है। इस विकार को वृद्धि कहते हैं । उदाहरण चक्र में देखलो ॥

पहिले पद के अंत में पहिली पांती का स्वर हो	अकार पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर हो	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती का स्वर होता है	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	ए	ऐ	एक + एक	= एकैक
अ	ऐ	ऐ	परम + ऐश्वर्य	= परमैश्वर्य
आ	ए	ऐ	तथा + एव	= तथैव
आ	ऐ	ऐ	महा + ऐश्वर्य	= महैश्वर्य
अ	ओ	औ	सुन्दर + ओदन	= सुन्दरौदन
आ	ओ	औ	महा + ओषधि	= महौषधि
अ	औ	औ	परम + औषध	= परमौषध
आ	औ	औ	महा + औदार्य	= महौदार्य

४ यण।

६१ ह्रस्व वा दीर्घ इकार उकार ऋकार से परे कोई भिन्न स्वर रहे तो क्रम से ह्रस्व वा दीर्घ इ उ ऋ को य व र हो जाते हैं । इसी विकार को यण् कहते हैं । यथा

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांती का स्वर होवे	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती के रूप हो जायेंगे	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
इ	अ	य	यदि + अपि	= यद्यपि
इ	आ	या	इति + आदि	= इत्यादि
इ	उ	यु	प्रति + उपकार	= प्रत्युपकार
इ	ऊ	यू	नि + ऊन	= न्यून
इ	ए	ये	प्रति + एक	= प्रत्येक
इ	ऐ	यै	अति + ऐश्वर्य	= अत्यैश्वर्य
इ	ऋ	यृ	युवति + ऋतु	= युवत्यृतु
ई	अ	य	गोपी + अर्थ	= गोप्यर्थ
ई	आ	या	देवी + आगम	= देव्यागम
ई	उ	यु	सखी + उक्त	= सख्युक्त
उ	अ	व	अनु + अय	= अन्वय
उ	आ	वा	सु + आगत	= स्वागत
उ	इ	वि	अनु + इत	= अन्वित
उ	ए	वे	अनु + एषण	= अन्वेषण
उ	ऐ	वै	बहु + ऐश्वर्य	= बह्वैश्वर्य
ऊ	अ	व	सरयू + अम्बु	= सरय्वम्बु
ऋ	अ	र	पितृ + अनुमति	= पित्रनुमति
ऋ	आ	रा	मातृ + आनन्द	= मात्रानन्द

५ अयादि।

६३ ए ऐ ओ औ इन से जब कोई स्वर आगे रहताहै तो क्रमसे अय् आय् अव् आव् हो जाते हैं। इस विकारको अयादि कहते हैं। नीचे के चक्र में उदाहरण लिखे हैं॥

यदि पद के अंत में पहिली पांती का स्वर हो	यदि पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर हो	तो अंत्य स्वर की तीसरी पांती हो जाती है	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
ए	अ	अय्	ने + अन = नयन	
ऐ	अ	आय्	नै + अक = नायक	
ओ	अ	अव्	पो + अन = पवन	
ओ	इ	अव्	पो + इत्र = पवित्र	
ओ	ई	अव्	गो + ईश = गवीश	
औ	अ	आव्	पौ + अक = पावक	
औ	इ	आव्	भौ + इनी = भाविनी	
औ	उ	आव	भौ + उक = भावुक	

६४ यदि शब्दके अनन्तर में ए वा ओ रहे और पर शब्द के आदि में अ आवे तो अ का लोप हो जायगा। उसकोलुप्त अकार कहते हैं और से ऽ चिन्ह से बोधित होता है। यथा सखे+अर्पय=सखेऽर्पय॥

६५ अंत्य और आद्य स्वर के संयोग से जो संधि फल होता है वह नीचे के चक्र देखने से ज्ञात होता है। जैसे अंत्य स्वर ई और आदि स्वर ए ह तो दोनोंका संधि फल वहां पर देखो जहां ईकार की पांती एकार की पांती से मिलजाती है तो वह सुगमता पूर्वक प्राप्त हो जायगा। इसी रीति स्वर संधि के लिखे हुए जितने नियम हैं वे सब इस चक्र में प्रत्यक्ष देख पड़ेंगे॥

अंत्य स्वर \ आदि स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ
अ	आ	आ	ए	ए	औ	ओ	अर	अर	ऐ	ऐ	औ	औ
आ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर	अर	ऐ	ऐ	औ	औ
इ	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
ई	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
उ	व	वा	वि	वी	ऊ	ऊ	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऊ	व	वा	वि	वी	ऊ	ऊ	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऋ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ॠ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ए	अय	अया	अयि	अयी	अयु	अयू	अयृ	अयॄ	अये	अयै	अयो	अयौ
ऐ	आय	आया	आयि	आयी	आयु	आयू	आयृ	आयॄ	आये	आयै	आयो	आयौ
ओ	अव	अवा	अवि	अवी	अवु	अवू	अवृ	अवॄ	अवे	अवै	अवो	अवौ
औ	आव	आवा	आवि	आवी	आवु	आवू	आवृ	आवॄ	आवे	आवै	आवो	आवौ

२ व्यंजन संधि

६९ व्यंजन अथवा स्वरके साथ जो व्यंजन का विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। संस्कृत में इसका विस्तार ऐसा बढ़ा के किया गयाहै कि जिसका बोध और स्मरण बड़ी कठिनता से होताहै परंतु हिन्दी भाषा में जो थोड़े से इस संधि के आवश्यक नियम हैं उन्हें लिखते हैं॥

६०. यदि ककार से परे घोष अन्तस्थ वा स्वर वर्ण रहे तो प्रायः क के स्थान में ग होगा। जैसे

दिक् + गज = दिग्गज
वाक् + दत्त = वाग्दत्त
दिक् + अम्बर = दिगम्बर
वाक् + ईश = वागीश
धिक् + याचना = धिग्याचना

६८ यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण से परे सानुनासिक वर्ण रहे तो प्रथम वर्ण के स्थान में निज वर्ग का सानुनासिक होगा। यथा

प्राक् + मुख = प्राङ्मुख
वाक् + मय = वाङ्मय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
उत् + मत्त = उन्मत्त
चित् + मय = चिन्मय

६९ यदि च ट प वर्णो से परे घोष अन्तस्थ वा स्वर वर्ण रहे तो प्रायः च के स्थान में ज और ट के स्थानमें ड वा ड़ और प के स्थान में ब होजाता है। जैसे

अच् + अंत = अजंत
षट् + दर्शन = षड्दर्शन
अप् + भाग = अब्भाग
अप् + जा = अब्जा

७० यदि ह्रस्व स्वर से परे छ वर्ण होवे तो उसे च सहित छ होता है और जो दीर्घ स्वर से परे रहे तो कहीं २। जैसे

परि + छेद = परिच्छेद
अव + छेद = अवच्छेद
वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
गृह + छिद्र = गृहच्छिद्र
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

७१ जब त वा द से परे चवर्ग अथवा टवर्गका प्रथम वा द्वितीय वर्ण हो तो त वा द के स्थान में च वा ट होता है। और चवर्ग वा टवर्ग के तृतीय वा चतुर्थ वर्ण के परे रहते त वा द को ज वा ड हो जाता है परंतु त वा द से जब श परे रहता है तो श को छ और त वा द को च होता है और लकार के परे रहते त वा द को ल हो जाता है। ऐसे ही त वा द से परे जब ह रहता है तो त वा द को द होकर हकार को धकार होता है। जैसे नीचे चक्र में लिखा है॥

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांतीका वर्ण होवे	और पर पद के आदि में दूसरी पांतीका वर्ण होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती के वर्ण होंगे	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
त वा द	च	च्च	उत् + चारण	=उच्चारण
"	च	च्च	सत् + चिदानन्द	=सच्चिदानंद
"	ज	ज्ज	सत् + जाति	=सज्जाति
"	ज	ज्ज	उत् + ज्वल	=उज्ज्वल
"	छ	च्छ	उत् + छिन्न	=उच्छिन्न
"	ट	ट्ट	तत् + टीका	=तट्टीका
"	ल	ल्ल	उत् + लङ्घन	=उल्लङ्घन
"	श	च्छ	सत् + शास्त्र	=सच्छास्त्र
"	श	च्छ	उत् + शिष्ट	=उच्छिष्ट
"	ह	द्ध	उत् + हार	=उद्धार
"	ह	द्ध	तत् + हित	=तद्धित

७२ यदि त से परे ग घ द ध ब भ य र व अथवा स्वर वर्ण रहे तो त के स्थान में द होगा। और जो द से परे इन में से कोई वर्ण आवे तो कुछ विकार न होगा। यथा

ह्रस्व अकार हो तो वह ओकार में मिल जाता है और उसके पहचानने के लिये ऽ ऐसा चिन्ह (अवग्रह) करदेते हैं। जैसे

मनः + गत = मनोगत
मनः + भाव = मनोभाव
मनः + ज्ञ = मनोज्ञ
मनः + योग = मनोयोग
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + नीत = मनोनीत
तेजः + मय = तेजोमय
मनः + हर = मनोहर
मनः + अनवधानता = मनोऽनवधानता

८७ यदि विसर्ग के पूर्व अ आ छोड़ कर कोई दूसरा स्वर हो और विसर्ग से परे ऊपर के लिखे हुए अक्षर का स्वर वर्ण रहे तो विसर्ग के स्थान में र होजाता है। जैसे

निः + गुण = निर्गुण
निः + घिन = निर्घिन
निः + जल = निर्जल
निः + झर = निर्झर
बहिः + देश = बहिर्देश
निः + धन = निर्धन
निः + बल = निर्बल
निः + भय = निर्भय
निः + नाथ = निर्नाथ
निः + मल = निर्मल
निः + युक्ति = निर्युक्ति
निः + वन = निर्वन
निः + विकार = निर्विकार

निः + हस्त = निर्हस्त
निः + अर्थ = निरर्थ
निः + आधार = निराधार
निः + इच्छा = निरिच्छा
निः + उपाय = निरुपाय
निः + औषध = निरौषध

८१ यदि विसर्ग के पूर्व ह्रस्व और दीर्घ अकार को छोड़कर कोई दूसरा स्वर होवे और विसर्ग से परे रकार होवे तो विसर्ग का लोप करके पूर्व स्वर को दीर्घ कर देते हैं। यथा

निः + रस = नीरस
निः + रोग = नीरोग
निः × रन्ध्र = नीरन्ध्र
निः + रेफ = नीरेफ

इति संधिप्रकरण ॥

अथ तृतीय अध्याय ॥

शब्द साधन।

८२ कह आये हैं कि शब्दसाधन उसे कहते हैं जिसमें शब्दोंके भेद अवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन होते हैं ॥

८३ कान से जो सुनाई देवे उसे शब्दकहते हैं परंतु व्याकरण में केवल उन शब्दों का बिचार किया जाता है जिनका कुछ अर्थ होता है। अर्थबोधक शब्द तीन प्रकार के होते हैं अर्थात संज्ञा क्रिया और अव्यय ॥

८४ संज्ञावस्तु के नामको कहते हैं। जैसे भारतवर्ष पृथिवीकेएक खण्डका नाम है पीपल एक पेड़का नाम है भलाई एक गुण का नाम है इत्यादि ॥

८७ क्रियाका लक्षण यहहै कि उसका मुख्य अर्थ करनाहै और वह काल पुरुष और वचन से सम्बन्ध नित्य रखती है। जैसेमाराथा जाते हैं पढ़ सकेंगी इत्यादि ॥

८८ अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिङ्ग संख्या और कारक नहीं अर्थात इनके कारण जिसके स्वरूपमें कुछ विकार न दिखाईदेवे। जैसे परंतु यद्यपि तथापि फिर जब तब कब इत्यादि ॥

८९ पहिले संज्ञा तीनप्रकार की होती है अर्थात रूढ़ियोगिक और योगरूढ़ि ॥

९० रूढ़ि संज्ञा उसे कहते हैं जिसका कोई खण्ड सार्थक न हो सके। जैसे घोड़ा कोड़ा हाथी पौथी इत्यादि। घोड़ा शब्दमें एकखण्ड घो और दूसरा ड़ा हुआ परंतु दोनोंनिरर्थक हैं इसलिये यहसंज्ञारूढ़ि कहाती है ॥

९१ जो दोशब्दों के योगमे बनी हो अथवा शब्द और प्रत्यय मिलकर बने उसेयोगिक संज्ञाकहते हैं। जैसे बालबाध कालज्ञान नर-मेध जीवधारी चलचारी बोलनेहारा कारक जापक पाठक इत्यादि ॥

९२ योगरूढ़ि संज्ञा वह कहाती है जो स्वरूपमें यौगिक संज्ञाके समान होती पर अपने अर्थ में इतनी विशेषता रखती है कि अवय-वार्थ को छोड़ संकेतितार्थका प्रकाश करती है। जैसे पीताम्बर पङ्कज गिरिधारी लम्बोदर हनुमान गणेश इत्यादि ॥

तात्पर्य्य यहहै कि पीत शब्द का अर्थ पीला है और अम्बर शब्द का अर्थ कपड़ा है परंतुजितने पीतवस्त्र पहिननेवाले हैं उन्हें छोड़कर विष्णु रूपी विशेष अर्थ का प्रकाश करता है इसलिये यह पद योग-रूढ़ि है ॥

९३ फिर संज्ञाके पांचभेद और भी हैं। जातिवाचक व्यक्तिवाचक गुणवाचक भाववाचक और सर्वनाम ॥

९४ जातिवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके अर्थसे वैसे रूपभर का ज्ञान हो। जैसे मनुष्य स्त्री घोड़ा बैल वृक्ष पत्थर पोथी कपड़ाआदि। कहाहै कि मनुष्य अमर है इस वाक्य में मनुष्य शब्द जातिवाचक है

2003 dt. 7.7.55 National Library

इस कारण कि उससे किसी विशेष मनुष्यका बोधनहीं परंतु मनुष्य गण अर्थात मनुष्य भर का बोध होता है * ॥

९३ व्यक्तिवाचक मनुष्य देश नगर नदी पर्वत आदिके मुख्यनाम को कहते हैं। जैसे चण्डीदत्त विश्वेश्वरप्रसाद भारतवर्ष काशी गंगा हिमालय वृन्दावन इत्यादि ॥

९४ गुणवाचक संज्ञा वह कहातीहै जो विभेदक होतीहै इसकारण उसे विशेषणभी कहते हैं। वाक्यमें गुणवाचक संज्ञा अकेलीनहीं आती परंतु यहां उदाहरण के लिये उसे अकेली लिखतेहैं। जैसे पीला नीला टेढ़ा सीधा ऊंचा नीचा उत्तम मध्यम ज्ञानी मानी इत्यादि ॥

९५ भाववाचक संज्ञाका लक्षण यहहै कि जिसके कहने से पदार्थ का धर्म वा स्वभाव समझा जाय अथवा उससे किसी व्यापारका बोध हो। जैसे ऊंचाई चौड़ाई समझ बूझ दौड़ धूप लेन देन छीन छोर बोल चाल इत्यादि ॥

९६ सर्वनाम संज्ञा उसे कहतेहैं जो और संज्ञाओंके बदलेमें कही जाय। जैसे यह वह आन और जो सो कोई कोन कई आप मैं तू इत्यादि। सर्वनाम संज्ञा का प्रयोजन यह है कि किसी वस्तु का नाम कहकर यदि फिर उसके विषय कुछ चर्चा करनेकी आवश्यकता हो तो उसके बदले में सर्वनाम आता है और सर्वनाम से पूर्वोक्त नाम बोधित होजाता है। सर्व नामोंसे यह फल निकलता है कि बारम्बार किसी संज्ञाको कहना नहीं पड़ता। इस से न तो विशेष बात बढ़तीहै और

---

* विद्यार्थी को चाहिये कि जातिवाचक का भेद इसरीतिसे समझ लेवे कि रामायण पोथीहै भागवत भी पोथीहै हितोपदेश यहभी पोथी का नाम है तो कई पदार्थ हैं जो अनेक विषयमें भिन्न २ हैं परंतु एक मुख्य विषय में समान हैं इस समानता के कारण उन सब पदार्थोंको एकहीजाति मानी जातीहै और एकही जातिवाचक नामअर्थात पोथी उनको दिया गया है। रामायण के गुण भागवत वा हितोपदेशमें नहीं हैं और रामायण नाम उन से कहा नहींजाता परंतु पोथीके गुण रामायण में भागवत में और हितोपदेश में रहते हैं इस कारण पोथी यह जातिवाचक नाम तीनों से लगता है ॥

न वाक्य में भिन्नता होतीहै । सर्वनामों के रूपोंमें लिङ्गके कारणकुछ विकार नहीं होता है जिन संज्ञाओं के स्थानमें वे आतेहैं उनके अनुसार सर्वनामों का लिङ्ग समझा जाताहै । सर्वनाम संज्ञाके दो धर्म हैं एकतो पुरुषवाचक जैसे मैं तू वह और दूसरा गुणीभूत जैसे कोन कोई आन और इत्यादि ॥

लिङ्गके विषय में।

९७ हिन्दी भाषा में दो ही लिङ्ग होतेहैं एक पुल्लिङ्ग दूसरास्त्रीलिङ्ग संस्कृत और आन भाषाओं में तीन लिङ्ग होतेहैं परंतु हिन्दी में नपुंसक लिंग नहीं है यहां सब सजीव और निर्जीव पदार्थोंके लिङ्ग व्यवहारके अनुसार पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग में समाप्त होजाते हैं ॥

९८ उन प्राणीवाचक शब्दों के लिङ्ग जानने में कुछ कठिनता नहीं पड़ती जिनके अर्थ से मिथुन अर्थात जोड़े का ज्ञान होता है क्योंकि पुरुषबोधक संज्ञा को पुल्लिङ्ग और स्त्रीबोधक संज्ञा को स्त्रीलिङ्ग कहते हैं । जैसे नर लड़का घोड़ा हाथी इत्यादि पुल्लिङ्ग और नारी लड़की घोड़ी हथिनी इत्यादि स्त्रीलिङ्ग कहाती हैं ॥

९९ हिन्दी के सबशब्दों का अधिक भाग संस्कृतसे निकलाहुआ है और संस्कृत में जिन शब्दों का पुल्लिङ्ग वा नपुंसकलिङ्ग होताहै वे सब हिन्दी में प्रायः पुल्लिङ्ग समझे जाते हैं। और जो शब्द संस्कृतमें स्त्रीलिङ्गहोते हैं वे हिन्दीमेंभी प्रायःस्त्रीलिङ्ग रहतेहैं । जैसे देश सूर्य जल रक्त दुःख इनमेंसे जल रक्त दुःख संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग हैं परन्तु हिन्दी में पुल्लिङ्ग हैं और भूमि बुद्धि सभा लज्जा संस्कृत में और हिन्दीमेंभी स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

१०० हिन्दीमें जिन प्राणीवाचक शब्दों के अंत में अकार वा आकार रहता है और उनका उपान्त्य वर्ण त नहीं होता है वे प्रायः पुल्लिङ्ग समझे जाते हैं । जैसे वर्णन ज्ञान पाप ब्रह्मा कपड़ा पंखा ॥

१०१ जिन निर्जीव शब्दों के अंत में ई वा त होताहै वे प्रायः स्त्रीलिङ्ग हैं । जैसे मोरी बोली चिट्ठी बात रात इत्यादि ॥

१०२ जिन भाववाचक शब्दोंके अन्त में आव त्व पन वा पा हो वे सब के सब पुल्लिङ्ग हैं। जैसे चढ़ाव बिकाव मिलाव मनुष्यत्व स्त्रीत्व पशुत्व लड़कपन सीधापन बुढ़ापा इत्यादि॥

१०३ जिन भाववाचक शब्दोंके अन्तमें आई ता वट वा हटहो वे स्त्रीलिङ्गहैं। जैसे अधिकाई चतुराई भलाई उत्तमता कोमलता मिठता बनावट सजावट चिकनाहट चिल्लाहट इत्यादि॥

१०४ सामासिक शब्दों का लिङ्ग अंत्य शब्द के लिङ्ग के अनुसार होताहै। जैसे स्त्रीलिङ्ग यहशब्द पुल्लिङ्ग है इस कारण कि लिङ्गशब्द पुल्लिङ्ग है वैसेही दयासागर पुल्लिङ्गहै इस कारण कि यद्यपि दया शब्द स्त्री लिङ्गहै तथापि अंत्य शब्द अर्थात सागर पुल्लिङ्ग है॥

अथ स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय॥

१०५ आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अंत्य आकार को प्रायः ईकार करने से स्त्रीलिङ्ग बनजाता है। कहीं२ आकार के स्थान में इया हो जाता है और यदि अंत्यात्तर द्वित्व हो तो एक व्यंजन का लोप हो जाता है। यथा

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग।
गधा	गधी
घोड़ा	घोड़ी
चेला	चेली
भांजा	भांजी
कुत्ता	कुत्ती वा कुतिया

१०६ हलन्त*पुल्लिङ्ग शब्दों के अंत्य हल से ई को मिला करके स्त्रीलिङ्ग बना लो। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
अहीर	अहीरी
तरुन	तरुनी

---

* चेत रखना चाहिये कि हिन्दी भाषा में अकारान्त शब्द प्रायः हलन्त के समान उच्चरित होते हैं॥

दास	दासी
देव	देवी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी

१०७ व्यापार करनेवाले पुल्लिङ्ग शब्दों से इनकरके जो शब्द के अन्तमें स्वरहो तो उसका लोप करदेते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ग्वाला	ग्वालिन
तेली	तेलिन
बेपारी	बेपारिन
लोहार	लोहारिन
सोनार	सोनारिन

१०८ बहुतेरे पुल्लिङ्ग शब्दों के आगे नी लगाने से स्त्रीलिङ्ग होजाता है। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ऊंट	ऊंटनी
बाघ	बाघनी
मोर	मोरनी
सिंह	सिंहनी
अहि	अहिनी

१०९ उपनाम वाची पुल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अंत्य स्वरको आइन आदेश करदेते हैं और जो आदि अक्षर का स्वर आ होवे तो उसे ह्रस्व करदेते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ओझा	ओझाइन
चौबे	चौबाइन
दुबे	दुबाइन
तिवारी	तिवराइन
पण्डा	पण्डाइन
पांड़े	पड़ाइन

मिसिर	मिसिराइन
ठाकुर	ठकुराइन
बाबू	बबुआइन

११० कईएक पुल्लिङ्ग शब्दोंके स्त्रीलिङ्ग शब्दटूसरेही होतेहैं। जैसे

पुल्लिङ्ग ।	स्त्रीलिङ्ग ।
पिता	माता
पुरुष	स्त्री
राजा	रानी
बैल	गाय
भाई	बहिन

बचन के विषय में

१११ व्याकरण में बचन संख्या को कहते हैं और वे भाषा में दो हो हैं एकबचन और बहुबचन। जिस शब्द के रूपसे एक पदार्थ का बोध होता है उसे एक बचन और जिससे एकसे अधिक समझाजाय उसे बहु बचन कहते हैं। जैसे लड़की गाती है यह एकबचन है और लड़कियां गाती हैं इसे बहुबचन कहते हैं॥

११२ संज्ञा में और क्रिया में एकबचनसे बहुबचन बनानेकी रीति आगे लिखी जायगी॥ बहुत से स्थानों में एकबचन और बहुबचन के रूपों में कुछ भेद नहीं होता इस कारण अनेक के बोधके निमित्त गण जाति लोग इत्यादि लगातेहैं। जैसेयहगण देवगण मनुष्य जाति पशु जाति पण्डित लोग राजा लोग इत्यादि॥

कारक के विषय में।

११३ कारक उसे कहते हैं कि जिसके द्वारा वाक्यमें विशेषकरके क्रिया के साथ अथवा टूसरे शब्दों के संग संज्ञा का सम्बन्ध ठीक २ प्रकाशित होता है॥

११४ हिन्दी भाषा में कारक आठ होते हैं अर्थात

१	कर्त्ता	५	अपादान
२	कर्म	६	सम्बन्ध
३	करण	७	अधिकरण
४	संप्रदा	८	सम्बोधन

१ कर्ता कारक उसे कहतेहैं जो क्रियाके व्यापार को करे। भाषा में उसका कोई विशेष चिन्ह नहीं है परंतु सकर्मक क्रिया के कर्ता के आगे अपूर्ण भूत को छोड़के शेष भूतकालों में ने आता है। जैसेलड़का पढ़ता है पण्डित पढ़ाता था पिताने सिखाया है* ॥

२ कर्म उसे कहतेहैं जिसमें क्रियाका फल रहताहै उसकाचिन्ह को है। जैसे मैं पुस्तक को देखताहूं उसने पंडित को बुलाया ॥

३ करण उसे कहते हैं जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करे उसका चिन्ह से है। जैसे हाथ से उठाता है पांवसे चलता है ॥

४ संप्रदान वह कहाता है जिसके लिये कर्ता व्यापारको करता है उसका चिन्ह को है। जैसे गुरु ने शिष्य को पोथी दी ॥

५ क्रियाके बिभाग की अवधिको अपादान कहते हैं उसका चिन्ह से है। जैसे वृक्ष से पत्ते गिरते हैं वह मनुष्य लोटे से जलदेता है॥

६ सम्बंध कारक का लक्षण यहहै जिससे स्वत्व सम्बंध आदि समझा जाय उसके चिन्ह ये हैं का के की। जैसे राजाका घोडा प्रजा के घर मनकी शक्ति ॥

७* कर्ता और कर्मके द्वारा जो क्रिया का आधार उसे अधिकरण कहते हैं उसके चिन्ह में पे पर हैं। जैसे वह अपने घरमें रहता है वे आसन पर बैठते हैं ॥

---

* सात सकर्मक क्रियाहैं अर्थात बकना बोलना भूलना जनना लाना लेजाना और खाजाना जिनके साथ भूतकाल में कर्ताके आगे ने नहीं आता है। लाना (ले+आना=लाना) लेजाना और खाजाना संयुक्तक्रिया हैं उनका पूर्वार्द्ध सकर्मक और उत्तरार्द्ध अकर्मक है इससे यह नियम निकलता है कि जब संयुक्त सकर्मक क्रिया का उत्तरार्द्ध अकर्मकहोता है तब उस क्रिया के भूतकाल में कर्ता के साथ ने चिन्ह नहींहोता

८ सम्बोधन उसकहतेहैं जिस से कोईकिसी को चिताकर अथवा पुकारकर अपने सन्मुख कराताहै उसके चिन्ह हे हो अरे इत्यादिहैं। जैसे हे महाराज रामदयाल हो अरे लड़के सुन ॥

११५ ऊपरकी रीतिसे प्रत्येक संज्ञाकी आठ अवस्था होसकती हैं उन अवस्थाओंकी सूचक प्रत्ययोंको विभक्तियां कहतेहैं ॥

कर्त्ताआदि की सूचक विभक्तियां ॥

कारक।	विभक्तियां।	कारक।	विभक्तियां।
कर्त्ता	० वा ने	अपादान	से
कर्म	को	सम्बन्ध	का के की
करण	से	अधिकर'	में पै पर
सम्प्रदान	को	सम्बोधन	हे अरे हो

११६ विभक्तियां स्वयं तो निरर्थकहैं परन्तु संज्ञाके अन्तमें जब आतीहैं तो सार्थक होजातीहैं और यद्यपि इन विभक्तियों में कुछ विकार नहींहोता तोभी संज्ञाके अन्तमें इनके लगानेसे बहुधा विकार हुआ करताहै ॥

११७ इसका भी स्मरण करनाचाहिये कि कर्ता और सम्बोधनको छोड़करके शेष कारकों के बहुवचन में शब्द और विभक्ति के मध्य में बहुवचन का चिन्हओं लगायाजाता है परन्तु सम्बोधन के बहुवचन में निरनुनासिक ओ होताहै ॥

अथ संज्ञा का रूप करण।

११८ कह आये हैं कि संज्ञा दो प्रकारकी होती हैं एक पुल्लिङ्ग दूसरी स्त्री लिङ्ग फिर प्रत्येक लिङ्ग की संज्ञा भी दो प्रकारकी होती हैं एकतो वे जिनकाउच्चारण हलन्त सा हुआ करता है दूसरी वे जिनका उच्चारण स्वरान्त होताहै ॥

११९ संज्ञा की कारक रचना अनेकरीति से होतीहै इस कारण सुभीते के निमित्त जितनी संज्ञा समानरीतिसे अपने कारकोंको रचती हैं उनसभों को एकहीभाग में करदेते हैं। हिन्दीकी सब संज्ञा चार भाग मेंआसकती हैं। यथा

१२० पहिलेभाग में वे सबसंज्ञा आतीहैं जिनके एक बचन और बहुबचन में विभक्ति के आनेसे संज्ञा का कुछ विकार नहीं होता है परन्तु बहुबचन में कर्ता और सम्बोधनको छोड़कर शेषकारकों में शब्द के आगे ओं लगाकर विभक्ति लाते हैं ॥

१२१ दूसरेभाग को वे सबसंज्ञा हैं जिनके एकबचन में और कर्ता के बहुबचन में विभक्ति के कारण कुछ बदलता नहीं पर बहुबचनके कर्मआदि कारकों में वा बहुबचन के चिन्हओं का वा अंत्य दीर्घ स्वर का विकार होताहै ॥

१२२ तीसरेभाग में जो संज्ञाआती हैं उनका यह लक्षण है कि केवल उन्हींमें कर्ता कारक के बहुबचन का विकार होताहै ॥

१२३ चौथेभाग में वे सब संज्ञा आती हैं जिनके प्रत्येक कारक के दोनों बचनों में विभक्ति के आने से संज्ञा कुछ बदल जातीहै ॥

पहिलाभाग ।

१२४ इसभाग में ह्रस्व उकारान्त एकारान्त ओकारान्त और हलन्त पुल्लिङ्गशब्द होतेहैं । विभक्तिके आनेसे उनकाकुछ विकार नहीं होता परन्तु कर्ता और सम्बोधनके बहुबचनको छोड़कर शेष कारकों में शब्द सेआगे ओं लगाकर विभक्तिलातेहैं । उदाहरण नीचे देतेहैं । यथा

१२५ ह्रस्वउकारान्त पुल्लिङ्गबंधु शब्द ।

कारक ।	एकबचन ।	बहुबचन ।
कर्ता	बंधु वा बंधुने*	बंधु वा बंधुओंने* ॥

---

* चेत रखना चाहिये कि जिस कर्ता कारकके साथने चिन्ह होता है वह अपूर्णभूतको छोड़के केवल सकर्मक धातुको भूतकालिक क्रिया के साथ आसकता है । और यदि कर्म कारक का चिन्ह लुप्त हो तो क्रियाके लिङ्ग बचन कर्म के अनुसार होंगे जैसे पण्डित ने पोथी लिखी महाराज ने अपने घोड़े भेजे । परन्तु जो कर्म अपने चिन्हको के साथ आवे तो क्रिया सामान्य पुल्लिङ्ग अन्यपुरुष एक बचन में होताहै । जैसे मैंने रामायण को पढ़ा है रानी ने सहेलियों को बुलाया इत्यादि । इस प्रयोग का वर्णन आगे लिखा जायगा ॥

कर्म	बन्धु को	बन्धुओं को
करण	बन्धु से	बन्धुओं से
सम्प्रदान	बन्धु को	बन्धुओं को
अपादान	बन्धु से	बन्धुओं से
सम्बन्ध	बन्धु का—के—की	बन्धुओं का—के—की
अधिकरण	बन्धु में	बन्धुओं में
सम्बोधन	हे बन्धु	हे बन्धुओ

१२६ ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग रेणु शब्द ॥

कारक	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	रेणु वा रेणु ने	रेणु वा रेणुओं ने
कर्म	रेणु को	रेणुओं को
करण	रेणु से	रेणुओं से
सम्प्रदान	रेणु को	रेणुओं को
अपादान	रेणु से	रेणुओं से
सम्बन्ध	रेणु का—के—की	रेणुओं का—के—की
अधिकरण	रेणु में	रेणुओं में
सम्बोधन	हे रेणु	हे रेणुओ

१३० एकारान्त पुल्लिङ्ग दुबे शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	दुबे वा दुबे ने	दुबे वा दुबेओं ने
कर्म	दुबे को	दुबेओं को
करण	दुबे से	दुबेओं से
सम्प्रदान	दुबे को	दुबेओं को
अपादान	दुबे से	दुबेओं से
सम्बन्ध	दुबे का—के—की	दुबेओं का—के—की
अधिकरण	दुबे में	दुबेओं में
सम्बोधन	हे दुबे	हे दुबेओ ॥

१२८ ओकारान्त पुल्लिङ्ग कोदो शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	कोदो वा कोदो ने	कोदो वा कोदोओं ने
कर्म	कोदो को	कोदोओं को
करण	कोदो से	कोदोओं से
सम्प्रदान	कोदो को	कोदोओं को
अपादान	कोदो से	कोदोओं से
सम्बन्ध	कोदो का—के—की	कोदोओं का—के—की
अधिकरण	कोदो में	कोदोओं में
सम्बोधन	हे कोदो	हे कोदोओ ॥

१२९ ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग सरसों शब्द ।

कारक	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	सरसों वा सरसों ने	सरसों वा सरसोंओं ने
कर्म	सरसों को	सरसोंओं को
करण	सरसों से	सरसोंओं से
सम्प्रदान	सरसों को	सरसोंओं को
अपादान	सरसों से	सरसोंओं से
सम्बन्ध	सरसों का—के—की	सरसोंओं का—के—की
अधिकरण	सरसों में	सरसोंओं में
सम्बोधन	हे सरसो	हे सरसोंओ ॥

१३० हलन्त पुल्लिङ्ग जल शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	जल वा जल ने	जल वा जलों ने
कर्म	जल को	जलों को
करण	जल से	जलों से
सम्प्रदान	जल को	जलों को
अपादान	जल से	जलों से

सम्बन्ध	जल का—के—की	जलों का—के—की
अधिकरण	जल में	जलों में
सम्बोधन	हे जल	हे जलो ॥

१३१ हलन्त पुल्लिङ्ग गांव शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	गांव वा गांव ने	गांव वा गांवोंने
कर्म	गांव को	गांवों को
करण	गांव से	गांवों से
सम्प्रदान	गांव को	गांवों को
अपादान	गांव से	गांवों से
सम्बन्ध	गांव का—के—की	गांवों का—के—की
अधिकरण	गांव में	गांवों में
सम्बोधन	हे गांव	हे गांवो

दूसरा भाग।

१३२ इस भागमें ह्रस्व वा दीर्घ ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द दीर्घऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द और दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द आते हैं। एकवचनमें और कर्त्ताके बहुवचन में विभक्तिके कारण कुछ बदलता नहीं पर कर्म आदि कारकों में इकारान्त शब्द से आगे ओं नहीं परन्तु यों लगाकर विभक्ति लातेहैं और कदाचित् अंत्यस्वर दीर्घ हो तो उसे ह्रस्व कर देतेहैं। उनके उदाहरण नीचे लिखते हैं। यथा

१३३ ह्रस्व इकारान्त पुल्लिङ्ग पति शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	पति वा पति ने	पति वा पतियों ने
कर्म	पति को	पतियों को
करण	पति से	पतियों से
सम्प्रदान	पति को	पतियों को
अपादान	पति से	पतियों से
सम्बन्ध	पति का—के—की	पतियो का—के—की

अधिकरण	पति में	पतियों में
सम्बोधन	हे पति	हे पतियो ॥

१३४ दीर्घ ईकारान्त पुल्लिङ्ग धोबी शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	धोबी वा धोबी ने	धोबी वा धोबियों ने
कर्म	धोबी को	धोबियों को
करण	धोबी से	धोबियों से
संप्रदान	धोबी को	धोबियों को
अपादान	धोबी से	धोबियों से
सम्बन्ध	धोबी का—के—की	धोबियों का—के—की
अधिकरण	धोबी में	धोबियों में
सम्बोधन	हे धोबी	हे धोबियो ॥

१३५ दीर्घ ऊकारान्त पुल्लिङ्ग डाकू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	डाकू वा डाकू ने	डाकू वा डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से	डाकुओं से
संप्रदान	डाकू को	डाकुओं को
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बंध	डाकू का—के—की	डाकुओं का—के—की
अधिकरण	डाकू में	डाकुओं में
सम्बोधन	हे डाकू	हे डाकुओ ॥

१३६ दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहूशब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	बहू वा बहू ने	बहू वा बहुओं ने
कर्म	बहू को	बहुओं को
करण	बहू से	बहुओं से
संप्रदान	बहू को	बहुओं को
अपादान	बहू से	बहुओं से

सम्बन्ध	बहू का-के-की	बहुओं का-के-की
अधिकरण	बहू में	बहुओं में
सम्बोधन	हे बहू	हे बहुओ ॥

तीसरा भाग।

१३७ इस भाग में पुल्लिङ्ग शब्द नहीं हैं पर आकारान्त ह्रस्व और दीर्घ इकारान्त और हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द आते हैं। आकारान्तस्त्रीलिङ्ग शब्दके एकबचनमें विकार नहीं होता बहुबचन मेंभी केवलइतनाविशेष है कि कर्त्ता में शब्द के अंत्यस्वर को सानुनासिक कर देते हैं। ह्रस्व और दीर्घ इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप एकबचन में ज्यों के त्यों बने रहते हैं और बहुवचन में वे पुल्लिङ्ग इकारान्त शब्दों के अनुसार अपने कारकों को रचते हैं केवल कर्त्ता के बहुबचन में शब्द से आगे यां होता है और यदि दीर्घ इकारान्त हो तो उसे ह्रस्व करदेते हैं। हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द की इतनी विशेषता है कि कर्त्ताके बहुबचन में शब्द से आगे यं लगा देते हैं। इनके उदाहरण नीचे लिखेहैं। यथा

१३८ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग खटिया शब्द।

कारक।	एकबचन।	बहुबचन।
कर्त्ता	खटिया वाखटिया ने	खटियां वा खटियाओं ने
कर्म	खटिया को	खटियाओं को
करण	खटिया से	खटियाओं से
सम्प्रदान	खटिया को	खटियाओं को
अपादान	खटिया से	खटियाओं से
सम्बन्ध	खटिया का-के-की	खटियाओं का-के-की
अधिकरण	खटिया में	खटियाओं में
सम्बोधन	हे खटिया	हे खटियाओ ॥

१३९ ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग तिथि शब्द।

कारक।	एकबचन।	बहुबचन।
कर्त्ता	तिथि वा तिथि ने	तिथियां वा तिथियों ने
कर्म	तिथि को	तिथियों को
करण	तिथि से	तिथियों से

सम्प्रदान	तिथि को	तिथियों को
अपादान	तिथि से	तिथियों से
सम्बन्ध	तिथि का-के-की	तिथियों का—के—की
अधिकरण	तिथि में	तिथियों में
सम्बोधन	हे तिथि	हे तिथियो ॥

१४० दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग बकरी शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	बकरी वा बकरी ने	बकरियां वा बकरियों ने
कर्म	बकरी को	बकरियों को
करण	बकरी से	बकरियों से
सम्प्रदान	बकरी को	बकरियों को
अपादान	बकरी से	बकरियों से
सम्बन्ध	बकरी का—के—की	बकरियों का—के—की
अधिकरण	बकरी में	बकरियों में
सम्बोधन	हे बकरी	हे बकरियो ॥

१४१ हलन्त स्त्रीलिङ्ग घास शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	घास वा घास ने	घासें वा घासों ने
कर्म	घास को	घासों को
करण	घास से	घासों से
सम्प्रदान	घास को	घासों को
अपादान	घास से	घासों से
सम्बन्ध	घास का—के—की	घासों का—के—की
अधिकरण	घास में	घासों में
सम्बोधन	हे घास	हे घासो ॥

चौथा भाग।

१४२ इस भाग में आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द होते हैं। एकवचन में और कर्त्ता के बहुवचन में विभक्ति के आने से आ को ए होजाता

है और शेष बहुवचनमें आ को ओं आदेशकरके फिर विभक्तिलातेहैं। यथा

१४३ आकारान्त पुल्लिङ्ग घोड़ा शब्द।

कारक	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	घोड़ा वा घोड़े ने	घोड़े वा घोड़ों ने
कर्म	घोड़े को	घोड़ों को
करण	घोड़े से	घोड़ों से
संप्रदान	घोड़े को	घोड़ों को
अपादान	घोड़े से	घोड़ों से
सम्बंध	घोड़े का—के—की	घोड़ों का—के—की
अधिकरण	घोड़े में	घोड़ों में
सम्बोधन	हे घोड़े	हे घोड़ो॥

१४४ विशेषता यहहै कि यदि संस्कृत आकारान्त पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग शब्द हो जैसे आत्मा कर्ता युवा राजा वक्ता श्रोता क्रिया संज्ञा आदि तो उसके रूपोंमें कुछ विकार नहींहोता परंतु बहुवचनमें अंत्य आकार से परे ओं कर देते हैं। जैसे

संस्कृत आकारान्त राजा शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	राजा वा राजा ने	राजा वा राजाओं ने
कर्म	राजा को	राजाओं को
करण	राजा से	राजाओं से
संप्रदान	राजा को	राजाओं को
अपादान	राजा से	राजाओं से
सम्बंध	राजा का—के—की	राजाओं का—के—की
अधिकरण	राजा में	राजाओं में
सम्बोधन	हे राजा	हे राजाओ॥

१४५ यदि व्यक्तिवाचक वा सम्बंधवाचक आकारान्त पुल्लिङ्गशब्द हो जैसे मन्ना मोहना रामा काका दादा पिता आदि तो उसका कारकरचना हिन्दी अथवा संस्कृत आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के समान दोनों रीति पर हुआ करती है। जैसे

१४६ व्यक्तिवाचक आकारान्त पुल्लिङ्ग दादा शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।		
कर्त्ता	दादा वा दादा ने	अथवा	दादे वा दादे ने
कर्म	दादा को	,,	दादे को
करण	दादा से	,,	दादे से
संप्रदान	दादा को	,,	दादे को
अपादान	दादा से	,,	दादे से
सम्बंध	दादा का—के—की	,,	दादे का—के—की
अधिकरण	दादा में	,,	दादे में
सम्बोधन	हे दादा	,,	हे दादे ॥
	बहुवचन ।		
कर्त्ता	दादा वा दादाओं ने	अथवा	दादे वा दादों ने
कर्म	दादाओं को	,,	दादों को
करण	दादाओं से	,,	दादों से
संप्रदान	दादाओं को	,,	दादों को
अपादान	दादाओं से	,,	दादों से
सम्बंध	दादाओं का—के—की	,,	दादों का—के—की
अधिकरण	हे दादाओ	,,	हे दादो ॥

गुणवाचक संज्ञा के विषय में ॥

१४७ कह आये हैं कि गुणवाचक संज्ञा बिभेदकहै अर्थात् दूसरी संज्ञाकी विशेषताका प्रकाश करती है इसलिये वह विशेषण कहातीहै और जिसकी विशेषताकोजनातीहै वह विशेष्यकहाताहै । जैसेनिर्मल जल इसमें निर्मल विशेषण और जल विशेष्यहै ऐसाही सर्वत्रजानो ॥

१४८ विशेषणके लिङ्ग वचन और कारक विशेष्य निघ्नहै अर्थात् विशेष्य को जो लिङ्ग आदि हो वेही लिङ्ग आदि विशेषण के होंगे ॥

१४९ हिन्दीमें अकारान्तको छोड़कर गुणवाचकमें लिंग वचन वा कारक के कारण कुछविकार नहींहोता । जैसे सुन्दर पुरुष सुन्दर स्त्री सुन्दर लड़के कोमल पुष्प कोमलपत्ते कोमल डालियों पर ॥

१५० आकारान्त विशेषण में विकार होने के तीननियम होतेहैं जिन्हें चेत रखना चाहिये। यथा

१ पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषणहो तो कर्त्ता और कर्मके एक वचन में जब उनका चिन्हनहीं रहता तब विशेषणका कुछ विकार नहींहोता। जैसे ऊंचा पेड़ ऊंचा पहाड़ देखो पीला वस्त्र पीला वस्त्र दो॥

२ पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषणहो तो शेष कारकोंके एक बचन में और बहुवचन में विशेषण के अंत्य आ को ए होजाताहै। जैसे बड़ेघर का स्वामी आयाहै वे ऊंचे पर्व्वतपर चढ़गये हैं सकरे फाटक से कैसे जाऊं अच्छे लड़के भले दासों के लिये॥

३ स्त्रीलिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो सबकारकोंके दोनों बचनों में विशेषण के अंत्य आ को ई आदेश करदेते हैं। जैसे वह गोरी लड़की है लम्बी रस्सी लावो हरी घास में गया है मीठी बातें बोलता है छोटी गेयाओं को दो॥

१५१ यदिसंख्यावाचक विशेषण हो और अवधारणकी विवक्षारहे तो उसके अन्तमें ओ कहीं सानुनासिक और कहीं निरनुनासिक करदेते हैं जैसे दोनों जावेंगे चारो लड़के अच्छे हैं। यदि समुदायसे दो तीन आदि व्यक्ति ली जायं तो दो तीन आदि इन रूपोंको विभक्ति जोड़ते हैं। जैसे दो को तीन से चार में॥

१५२ एक वस्तु में दूसरीसे वा उस जाति की सब वस्तुओं से गुण की अधिकाई वा न्यूनता प्रकाश करनेके लिये यह रीति होतीहै कि विशेषण में कुछ विकार नहीं होता विशेष्यका कर्त्ता कारक आताहै और जिस संज्ञा से उपमा दी जाती है उसका अपादान कारक होता है। जैसे यह उससे अच्छा है यमुना गंगा से छोटी है लड़की लड़के से सुन्दर है यह सब से अच्छा है हिमालय सब पर्वतों से ऊंचाहै॥

यह हिन्दी में साधारण रीतिहै पर कहीं२संस्कृतकी रीतिके अनुसार तर और तम ये प्रत्यय विशेषण को जोड़ते हैं। जैसे कोमल कोमलतर कोमलतम प्रिय प्रियतर प्रियतम शिष्ट शिष्टतर शिष्टतम आदि॥

चौथा अध्याय ॥

सर्वनामों के विषय में ।

१५३ सर्वनाम संज्ञा के लिंग का नियम यहहै कि जिनके बदलेमें सर्व नाम आवे उन शब्दों के लिंग के समान उसका भी लिंग होगा । जैसे पंडित ने कहा मैं पढ़ाताहूं यहां पण्डित पुल्लिङ्ग है तो मैं भी पुल्लिङ्ग हुआ कन्या कहती है कि मैं जातीहूं यहां कन्या शब्द के स्त्रीलिङ्ग होनेके कारण सर्वनाम भी स्त्रीलिंग है ऐसाही सर्वत्रजानो ॥

१५४ सर्वनाम संज्ञाके कईभेदहैं जैसे पुरुषवाची अनिश्चयवाचक निश्चयवाचक आदरसूचक सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक ॥

१ पुरुष वाची सर्वनाम ॥

१५५ पुरुषवाची सर्वनाम तीनप्रकारके हैं १ उत्तमपुरुष २ मध्यमपुरुष ३ अन्यपुरुष । उत्तम पुरुष सर्वनाम में मध्यमपुरुष तू और अन्यपुरुष वह है। मैं बोलनेवालेके बदले तू सुननेवालेके पलटे और जिसकी कथा कही जातीहै उसके पर्याय पर अन्य पुरुष आता है । जैसेमैंतुम से उसकी कथा कहता हूं ॥

१५६ उत्तम पुरुष में शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	मैं वा मैं ने	हम वा हम ने वा हमों ने
कर्म	मुझ को मुझे	हम को हमों को वा हमें
करण	मुझ से	हम से वा हमों से
संप्रदान	मुझ को मुझे	हम को हमों को वा हमें
अपादान	मुझ से	हम से वा हमों से
सम्बन्ध	मेरा—रे—री	हमारा—रे—री
अधिकरण	मुझ में	हम में वा हमों में ॥

१५७ सम्बन्ध कारक की विभक्ति (रा रे री) केवल उत्तम और मध्यमपुरुष में होती है और ना (ने नी) यह निजवाचक वा आदरसूचक आप शब्द के सम्बन्ध कारक में होता है । इन रूपों का अर्थ और उनकी योजना का (के की) के समान है ॥

१५८ मध्यमपुरुष तू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	*तूं वा तू ने	तुम वा तुम ने वा तुम्हों ने
कर्म	तुझको वा तुझे	तुमको तुम्हें वा तुम्होंको
करण	तुझ से	तुम से वा तुम्होंसे
संप्रदान	तुझ को तुझे	तुमको तुम्हें तुम्हों को
अपादान	तुझ से	तुम से वा तुम्हों से
सम्बन्ध	तेरा—रे—री	तुम्हारा—रे—री
अधिकरण	तुझ में	तुम में वा तुम्हों में
सम्बोधन	हे तू	हे तुम ॥

अन्य पुरुष सर्वनाम

१५९ अन्यपुरुष सर्वनाम दोप्रकार का है एकनिश्चय वाचक और दूसरा अनिश्चयवाचक । निश्चयवाचकभी दो प्रकारकाहोताहै अर्थात यह और वह निकटवर्त्ती के लिये यह और दूरवर्त्ती के लिये वहहै ॥

१६० निश्चयवाचक यह ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन
कर्त्ता	*यह वा इस ने	ये वा इन ने वा इन्हों ने
कर्म	इस को वा इसे	इनको वा इन्हें वा इन्होंको
करण	इस से	इनसे वा इन्हों से
सम्प्रदान	इस को वा इसे	इन को इन्हें वा इन्होंको
अपादान	इस से	इन से वा इन्हों से
सम्बंध	इस का—के—की	इनका वाइन्होंका—के—की
अधिकरण	इस में	इन में वा इन्हों में ॥

१६१ निश्चयवाचक वह ।

---

*तू वा तैं और उन वा विन और जो वा जोन यह केवल देश भेद से उच्चारण की विलक्षणता है ॥

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	*वह वा उसने	वे उन ने वा उन्हों ने
कर्म	उस को वा उसे	उन को वा उन्हें वा उन्हों को
करण	उस से	उन से वा उन्हों से
संप्रदान	उस को वा उसे	उनको वा उन्हें वा उन्हों को
अपादान	उस से	उन से वा उन्हों से
संबंध	उस का—के—की	उनका वा उन्हों का—के—की
अधिकरण	उस में	उनमें वा उन्हों में ॥

१६२ कर्ता कारक के एकवचन में और बहुवचन में ने चिन्हके साथ उत्तमपुरुष और मध्यम पुरुष का कुछ विकार नहीं होता परन्तु अन्यपुरुष यह को इस और ये को इन तथा वहको उस और वे को उन आदेश करते हैं ऐसे ही सब विभक्तियों के साथ समझो ॥

१६३ यदि उत्तम वा मध्यमपुरुषसे परे कोई संज्ञा हो और उस संज्ञा के आगे ने वा का (के की) चिन्हरहे तो मैं को मुझ तू को तुझ मेरा को मुझ—का और तेरा को तुझ—का आदेश कर देते हैं। जैसे मैंने यह बिना संज्ञा हे संज्ञालगाओ तो मुझ ब्राह्मणने हुआ। ऐसेही तुझ निर्बुद्धि ने मुझ कंगाल का घर हम लोगों का बस्त इत्यादि ॥

१६४ उत्तमपुरुषऔर मध्यमपुरुषके संबंध कारकके एकवचनमें मैं को मे और तू को ते और बहुवचनमें हमको हमा और तुमको तुम्हा आदेश करकेसंबंध कारकको विभक्ति का के की को रा रे री होजाता हे और शेष विभक्तियों के साथ संयोग होवे तो जैसा ने के साथ कहाहे सोई जानो ॥

१६५ इन सर्व नामों के कर्म और संप्रदान कारक में दो २ रूप होने से लाभ यहहे कि दो को एकट्ठे होकर उच्चारण को बिगाड़ देतेहैं इस कारण एकको सहित और एकको रहित रहताहे। जैसे मैं इसको तुमको दूंगा यहांमैं इसे तुमको दूंगा ऐसा बोलना चाहिये इत्यादि ॥

१६६ आदरकेलिये एक में बहुवचन और बहुत्वके निश्चयार्थ बहु बचन में लोग वा सब लगा देते हैं। जैसेतू क्या कहता हे यहांआदर-

---

*यह और वह इनरूपोंको कभी २ बहुवचन में भी योजनाकरते हैं। जैसे यह दो भाई आपस में नित्य लड़ते हैं ॥

पूर्वक तुमक्या कहते हो ऐसा बोलतेहैं और हमसुनते हैं यहांबहुत्वके निश्चयार्थ हमलोग सुनते हैं अथवा हम सब सुनतेहैं ऐसा बोलतेहैं ॥

१६७ जब अन्यपुरुष के साथ कोई संज्ञा आतीहै और कारक का चिन्ह उस संज्ञाके आगे रहता है तो अन्यपुरुष से केवल उसी संज्ञाका निश्चय विशेष करके होता है कुछ अन्यपुरुष सम्बंधी वस्तुका ज्ञान नहीं होता । जैसे उसपरिवारका उसघोड़ेपर औरउसका परिवार और उसके घोड़े पर इससे अन्यपुरुष सम्बंधी परिवार और घोड़े का ज्ञान होता है ॥

अनिश्चयवाचक सर्वनाम कोई शब्द ।

१६८ इसके कहनेसे किसीपदार्थका निश्चय नहींहोता इसलिये यह अनिश्चयवाचक कहाताहै । कर्ता कारकमें कोईशब्द ज्यों का त्यों बना रहता है परन्तु शेष कारकोंमें कोई को किसी आदेश करतेहैं । इसका बहुवचन नहीं होता परन्तु दोबार कहने से बहुवचन समझा जाता है । जैसा कोई २ कहते हैं इत्यादि ॥

कारक ।	एकवचन ।
कर्ता	कोई वा किसी ने
कर्म	किसी को
करण	किसी से
संप्रदान	किसी को
अपादान	किसी से
सम्बंध	किसी का—के—की
अधिकरण	किसी में ॥

१६९ कोई शब्दके समान कुछ शब्द भी है परंतु अव्ययहोने से इसकी कारकरचना नहीं होती और संख्या के अनिश्चयमें वा क्रिया-विशेषण की रीतिपर प्रायः इसका प्रयोग होताहै । जैसे कुछभेद कुछ रुपये कुछ बात कुछ लोग कुछ लिखो कुछ पढ़ो इत्यादि ॥

आदरसूचक सर्वनाम आप शब्द ।

१७० आदरके लिये मध्यम और अन्यपुरुषको आप आदेश होता है । उसके कारक हलन्त पुल्लिङ्ग संज्ञाके समानहोतेहैं और जिसक्रिया

का आप शब्द कर्ता रहेगा वह अवश्य बहुवचनान्तहोगी इसीसे बहु-वचन में बहुत्व प्रकाशित करने के लिये लोग शब्द लगादेतेहैं । जैसे

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	आप वा आपने	आप लोग वा आपलोगों ने
कर्म	आप को	आप लोगों को
करण	आप से	आप लोगों से
संप्रदान	आप को	आप लोगों को
अपादान	आप से	आप लोगों से
सम्बंध	आप का—के—की	आप लोगों का—के—की
अधिकरण	आप में	आप लोगों में ॥

१०१ प्रायः मध्यमपुरुष के बदले आदर के लिये आपशब्द आता है परन्तु अन्यपुरुष के निमित्त भी इसका प्रयोग होताहै उसकीविद्या मानता के रहते हाथ बढ़ाने से समझा जाताहै कि मध्यम नहीं पर अन्य पुरुष की चर्चा हो रही है ॥

१०२ आप शब्द निजका भी वाचकहोके संज्ञाओंकाविशेषणहोता है कर्ता कारक जैसे मैं आप बोलूंगा तुम आप कहो लड़के आप आयेहैं इत्यादि ॥

१०३ जब कर्ताके साथ आपशब्द आताहै तब उसका कुछविकार नहींहोता परन्तु शेष कारकों में आपको अपना आदेश करदेतेहैं और उससे निजका सम्बंध समझाजाताहै और उसके रूप भाषा के आकारान्त शब्द की रीति पर होते हैं । जैसे

कारक ।	एकवचन ।
कर्ता	आप
कर्म	अपने को
करण	अपने से
संप्रदान	अपने को
अपादान	अपने से
सम्बंध	अपना—ने—नी
अधिकरण	अपने में ॥

१०४ आपशब्द के पूर्वोक्त रूप उत्तम मध्यम और अन्यपुरुष में आजाते हैं और एकवचन का प्रयोग बहुवचन में होताहै । जिस सर्वनाम के आगे वे आतेहैं उसके सम्बन्ध वाले विशेषण समझेजातेहैं । जैसे मैं अपना कामकरता हूं तू अपनी बोली नहीं समझताहै वे अपने घर गये हैं इत्यादि ॥

१०५ आपस यह परस्परबोधक नियम रहित रूप आप शब्द से बनाहुआहै प्रायः इसके सम्बन्ध और अधिकरण कारक उत्तम मध्यम और अन्यपुरुषों में आया करतेहैं । जैसे आपसकी लड़ाई में आपसका मेल हम आपस में परामर्श करेंगे तुमलोग आपस में क्या कहते हो ॥

प्रश्नवाचक सर्वनाम कौनशब्द ।

१०६ प्रश्नवाचक सर्वनाम कौनशब्द कर्ता कारकके दोनों वचनों में ज्योंका त्यों बनारहता है और परशेष कारकों के एकवचन में कौन को किस और बहुवचन में किन वा किन्ह आदेश करके उनके आगे विभक्ति लाते हैं । जैसे

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	कौन किसने	कौन किनने
कर्म	किसको किसे	किनको किन्हें
करण	किससे	किनसे
संप्रदान	किसको किसे	किनको किन्हें
अपादान	किससे	किनसे
संबंध	किसका—के—की	किनका—के—की
अधिकरण	किसमें	किनमें ॥

१०७ कौनशब्द के समान क्या शब्द भी प्रश्नवाचक है पर इसकी कारक रचना न होनेके कारण उसेअव्यय कहते हैं और वह विशेषण के तुल्य आया करताहै । जैसे क्या बात क्या ठिकाना क्या कहूंगा ॥

१०८ कौन और क्या ये प्रश्नवाचक अकेलेआवें तो कौनशब्द से प्रायः मनुष्य समझा जायगा और क्या शब्द से अप्राणिवाचक का बोध होगा । जैसे कौनहै अर्थात कौनमनुष्य है किस (मनुष्य) का है किन ने किया क्या है अर्थात क्या वस्तु है क्या हुआ क्या देखा इत्यादि ।

परन्तु जो संज्ञा के साथि आवें तो कोन और क्या दोनों निर्जीव और सजीव को लगतेहैं। जैसे किसमनुष्य से किन लोगों में किसउपाय से कौन ज्ञानी पुरुषहै क्या चोरहै क्या योद्धाहै॥

सम्बंध वाचक सर्वनाम।

१७९ सम्बंधवाचक सर्वनाम उसेकहते हैं जो कहीहुई संज्ञा से कुछ वर्णन मिलाता है। जैसे आपने जो घोड़ा देखाथा सो मेरा है। सम्बंध वाचक सर्वनाम जो जहां रहताहै वहां सो अथवा वहशब्द भी अवश्य लिखा वा समझा जाताहै इसलिये इसे संबंधवाचक कहतेहैं॥

१८० जो वा जोन कर्त्ता के दोनों वचन में ज्यों का त्यों बना रहता है पर और कारकों के एकवचन में जो को जिस और बहुवचन में जिन वा जिन्ह आदेश होजाता है। यथा

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	जो वा जिसने	जो वा जिनने
कर्म	जिस को वा जिसे	जिन को जिन्हों को जिन्हें
करण	जिस से	जिन से जिन्हों से
संप्रदान	जिस को जिसे	जिन को जिन्हों को जिन्हें
अपादान	जिस से	जिन से जिन्हों से
संबंध	जिस का—के—की	जिन का जिन्हों का—के—की
अधिकरण	जिस में	जिन में जिन्हों में॥

१८१ जो शब्द का परस्पर संबंधी सो वो तीन शब्द कर्त्ता कारक के दोनों वचनों में जैसे का तैसा बनारहता है पर शेषकारकों के एक वचन में सो को तिस और बहुवचन में तिन वा तिन्ह आदेश कर देते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	सोवा तिस ने	सो वा तिन ने
कर्म	तिस को तिसे	तिन को तिन्हें तिन्हों को
करण	तिस से	तिन से तिन्हों से
संप्रदान	तिसको तिसे	तिन को तिन्हें तिन्हों को
अपादान	तिस से	तिनसे तिन्हों से

सम्बंध	जिस का-के-की	तिन का-के-की
अधिकरण	तिसमें	तिन में तिन्हों में ॥

१८२ चेतरखनाचाहिये कि निश्चयवाचक प्रश्नवाचक और सम्बन्धवाचक सर्वनामों में कर्त्ताको छोड़ के शेषकारकों के बहुवचनमेंसानुनासिक हों विभक्ति के पूर्व कोई २ विकल्प से लगादेते हैं । जैसेइनने वा इन्होंने जिनका वा जिन्होंका बोलते हैं । परंतु कोई २ वैयाकरण कहते हैं कि जिस रूपमें ओं वा हों आवे वह सदा बहुत्व बतानेके निमित्त होताहै । जैसे हमों को तुम्हों को अर्थात हमलोगों को तुम लोगों को इत्यादि । और अन्य रूप हमको तुमको आदि केवल आदरार्थ बहुवचन में आते हैं ॥

१८३ इस उस किस जिस तिस सर्वनामोंके स को तनाआदेशकरने से ये परिमाणवाचक शब्द अर्थात् इतना उतना कितना जितना और तितना बनाये जातेहैं और उन्हींसर्वनामोंके साथ सामान्यतासूचक सा (से सी)के लगानेसे ये प्रकारवाचक शब्द भी अर्थात ऐसा कैसा जैसा तैसा और वैसा हुएहैं । इस+सा = ऐसा किस+सा = कैसा जिस+सा = जैसा और तिस+सा = तैसा । यह पांचों गुणवाचककी रीतिपर आते हैं और उनके विकार होनेका नियम लिङ्ग वचनके कारण वही है जो आकारान्त गुणवाचक के विषय बताया गयाहै ॥

१८४ ऊपर के लिखे हुये सर्वनामों को छोड़के कितने एक शब्द और भी आते हैं जो इन्हीं सर्वनामोंके तुल्य होते हैं । जैसे एक दो दोनों और सब अन्य कई के आदि ॥

इति सर्वनाम प्रकरण ॥

पांचवां अध्याय ॥

क्रिया के विषय में ॥

१८५ कहआये हैं कि क्रिया उसेकहतेहैं जिसका मुख्यअर्थ करना है वह काल पुरुष और वचन से सम्बन्ध रखती है ॥

१८६ क्रिया के मूलको धातु कहते हैं और उसके अर्थसे व्यापार का बोध होताहै ॥

१८७ चेतकरनाचाहिये कि जिसशब्दके अन्तमें ना रहे और उसके अर्थ से कोईव्यापार समझाजाय तो वही क्रियाका साधारण रूपहै जिसे क्रियार्थक संज्ञा भी कहते हैं । जैसे लिखना सीखना बोलना इत्यादि ॥

१८८ इसक्रियार्थक संज्ञाके ना का लोपकरके जो रहजाय उसेही क्रियाका मूलजानो क्योंकि वह सब क्रियाओं के रूपोंमें सदाविद्यमान रहताहै । जैसे बोलना यह एक क्रियार्थक संज्ञाहै इसके ना का लोप किया तो रहा बोल इसे ही मूल अर्थात धातु समझो और ऐसेही सर्वत्र ॥

१८९ क्रिया दो प्रकार की होती है एक सकर्मक दूसरी अकर्मक सकर्मकक्रिया उसे कहतेहैं जो कर्मके साथ रहती है अर्थात जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्ता में न पायाजाय जैसे पण्डितपोथी को पढ़ता है यहां पण्डित कर्ता है क्योंकि पढ़ने की क्रिया पण्डितके आधीनहै । यदि यहां पण्डित शब्द न बोलाजायगा तो पढ़नेकी क्रिया के साधन का बोध भी न होसकेगा और पोथी इसहेतु से कर्महै कि इस क्रिया का जो पढाजाना रूप फलहै सो उसी पोथीमें है तो यह क्रिया सकर्मक हुई ऐसेही लिखना सुनना आदि और भी जानो ॥

१९० अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिसके साथ कर्मनहीं रहता अर्थात उसका व्यापार और फल दोनों एकत्र होकर कर्ताही में मिलते हैं । जैसे पण्डित सोताहै यहां पण्डित कर्ताहै और कर्म इस वाक्यमें कोई नहीं पण्डितही में व्यापार और फल दोनोंहै इसकारण यहक्रिया अकर्मक कहाती है ऐसे ही उठना बैठना आदि भी जानो ॥

१९१ सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं एक कर्तृप्रधान और दूसरी कर्मप्रधान जिस क्रिया का लिङ्गवचन कर्ताके लिङ्गवचनके अनुसार हो उसे कर्तृप्रधान और कर्मके लिङ्ग और वचन के समान जिस क्रियाका लिङ्ग वचन होवे उसे कर्मप्रधान क्रिया कहते हैं । यथा

कर्तृप्रधान ।	कर्मप्रधान ।
स्त्री कपडा सीती है	कपड़ा सीया जाता है

किसान गेहूं बोवेगा	गेहूं बोया जायगा
लड़की पढ़ती थी	लड़की पढ़ाई जाती थी
घोड़े घास खाते हैं	घोड़े से घास खाईजाती है ॥

१९२ ध्यानरखना चाहिये कि यदि कर्मप्रधान क्रियाके संग कर्ता की आवश्यकता होवे तो उसे करण कारकके चिह्न के साथ लगादेा। जैसे रावण राम से मारागया लड़के से रोटियां नहीं खाईगईं हमसे तुम्हारी बात नहीं सुनी जाती ॥

१९३ समझ रक्खो कि जैसे कर्तृप्रधान क्रिया के साथ कर्ता का होना आवश्यक है वैसा ही कर्मप्रधान क्रिया के संग कर्म भी अवश्य रहता है परन्तु जहां अकर्मक क्रियाकारूप कर्मप्रधान क्रियाके समान मिले वहां उसे भावप्रधान जानेा ॥

१९४ इससे यह बात सिद्ध हुई कि जब प्रत्यय कर्ता में होता तो कर्त्ताप्रधान होताहै और जब कर्ममें होताहै तब कर्म। इसी रीति से भाव में जब प्रत्यय आता है तो भावही प्रधान होजाता है। जैसे रातभर किसीसे नहीं जागाजाता बिना बोले तुमसे नहीं रहा जाता बिना काम किसीसे बैठा जाता है इत्यादि ॥

१९५ धातु के अर्थको भाव कहते हैं हिन्दीभाषा में भावप्रधान क्रिया कमआती है और प्रायः उसका प्रयोग नहीं शब्द के साथ बोला जाता है ॥

१९६ क्रिया के करने में जो समय लगता है उसे काल कहतेहैं उसके मुख्य भाग तीन हैं अर्थात भूत वर्तमान और भविष्यत। भूत-कालिक क्रिया उसे कहते हैं जिसकी समाप्ति होचुकीहो अर्थात जिस में आरम्भ और समाप्ति दोनों पाईजायँ। जैसे तुम ने कहा मैंने सुना है। वर्तमान कालिकक्रिया वहकहाती है जिसका आरम्भ होचुकाहो परन्तु समाप्ति न हुईहो। जैसे वे खेलतेहैं मैं देखताहूं। भविष्यतकाल की क्रियाका लक्षण यह है कि जिसका आरम्भ न हुआ हो। जैसे मैं पढ़ूंगा तुम सुनोगे इत्यादि ॥

१९७ छः प्रकारकी भूतकालिक क्रियाहोतीहै अर्थात सामान्यभूत पूर्णभूत आसन्न भूत संदिग्धभूत अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत ॥

१ सामन्यभूत कालकी क्रियासे क्रियाकी पूर्णता तो समझीजाती है परन्तु भूतकालकी विशेषता बोधित नहीं होती ॥

२ पूर्णभूत उसे कहतेहैं जिससे क्रिया की पूर्णता और भूतकाल का दूरता दोनों समझी जाती हैं ॥

३ आसन्नभूत से क्रियाकी पूर्णता और भूतकाल की निकटताभी जानी जाती है ॥

४ सन्दिग्धभूतसे भूतकालिक क्रियाका सन्देह समझा जाताहै ॥

५ अपूर्णभूतकाल की क्रियासे भूतकाल तो पायाजाता है परन्तु क्रियाकी पूर्णता पाई नहीं जाती ॥

६ हेतुहेतुमद्भूत क्रिया उसे कहते हैं जिसमें कार्य और कारण काफल भूतकाल का होता है ॥

१९८ वर्त्तमानकाल की क्रिया के दो भेदहैं अर्थात सामान्यवर्त्तमान और सन्दिग्धवर्त्तमान । सामान्यवर्त्तमान क्रियासे जाना जाताहै कि कर्ता क्रियाको उसी समय कररहा है । सन्दिग्धवर्त्तमान से वर्त्तमानकालिकक्रिया का सन्देह समझा जाता है ॥

१९९ भविष्यत कालिकक्रियाकी दो अवस्था होतीहैं अर्थातसामान्यभविष्यत और सम्भाव्य भविष्यत । सामान्य भविष्यत क्रियाकाअर्थ उक्त हुआहै । सम्भाव्य भविष्यत की क्रियासे भविष्यतकाल और किसी बात की चाह जानी जातीहै ॥

२०० क्रियाके दोभेद और भी हैं एक विधि दूसरी पूर्वकालिक क्रिया । विधिक्रिया उसे कहते हैं जिस से आज्ञा समझी जाती है । पूर्वकालिक क्रिया से लिङ्गवचन और पुरुष का बोध नहीं होता और उसकाकाल दूसरी क्रिया से प्रकाशित होताहै ॥

क्रिया के सम्पूर्ण रूपके विषय में ।

२०१ कहआयेहैं कि क्रिया के साधारणरूपके ना का लोप करके जो शेष रहता है सो क्रियाका धातुहै और क्रिया के समस्त रूपों में धातु निरन्तर अटल रहताहै । अब ये दो बातें चेतरखना चाहियें ॥

१ क्रियाके धातु के अन्त में ता करदेने से हेतुहेतुमद्भूत क्रिया बनती है । जैसे धातु खोल और हेतुहेतुमद्भूत है खोलता ॥

२ क्रियाके धातुके अन्तमें आ कर देनेसे सामान्यभूत कालकी क्रिया होतीहै। जैसे धातु खोल और सामान्यभूतभूत है खोला ऐसेही सर्वत्रसमझो*

२०२ ये तीन अर्थात धातु हेतुहेतुमद्भूत और सामान्यभूत क्रियाके संपूर्ण रूप के मुख्य भाग हैं इस कारण कि इन्हीं से क्रिया के सब रूप निकलते हैं। जैसे

१ धातु से संभाव्यभविष्यत सामान्यभविष्यत विधि और पूर्व कालिक क्रिया निकलती हैं॥

२ हेतुहेतुमद्भूत से सामान्यवर्त्तमान अपूर्ण भूत और संदिग्ध वर्त्तमान क्रिया निकलती हैं॥

३ सामान्यभूत से आसन्नभूत पूर्णभूत और संदिग्धभूत की क्रिया निकलती हैं। जैसा नीचे क्रिया वृत्त में लिखा है।

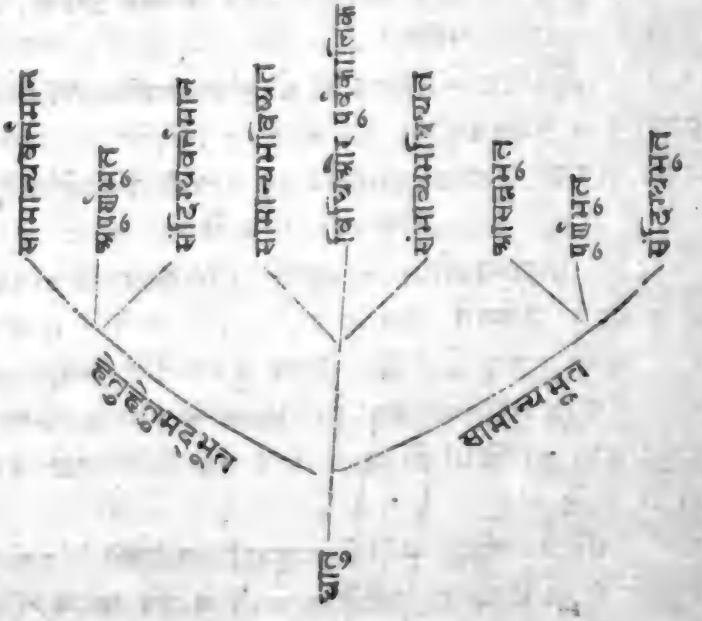

*जो धातु स्वरान्त हो तो सामान्यभूत क्रिया के बनाने में उच्चारण के निमित्त धातु के अन्त में या लगा देतेहैं और जो धातुके अन्त में ई वा ए होवे तो उसे ह्रस्व करदेते हैं। जैसे धातु खा और सामान्यभूत खाया वैसे ही पी पिया छू छूया दे दिया धो धोया आदि जानो॥

क्रिया के बनाने के विषय में ॥

१ धातु से ।

२०३ संभाव्यभविष्यत—धातु हलन्त हो तो उसको क्रम से ऊं ए ए यं ओ यं इन स्वरों के लगाने से तीनों पुरुषकी क्रिया दोनों वचन में हो जाती हैं । और जो धातु स्वरान्त हो तो ऊं ओ को छोड़ शेष प्रत्ययों के आगे व विकल्प से लगाते हैं । जैसे हलन्त धातु बोल से बोलूं बोले आदि होते हैं और स्वरान्त धातु खा से खाऊं खाये वा खावे आदि होते हैं ॥

२०४ सामान्यभविष्यत—संभाव्यभविष्यत क्रिया के आगे पुल्लिङ्ग एक वचन के लिये गा बहुवचन के लिये गे और स्त्रीलिंग एक वचन के लिये गी बहुवचन के लिये गीं तीनों पुरुष में लगा देते हैं। जैसे खाऊंगा खावेगा खावेगी आदि ॥

२०५ विधिक्रिया—विधियक्रिा और संभाव्यभविष्यत क्रिया में केवल मध्यमपुरुष के एकवचन का भेद होता है । विधि में मध्यमपुरुष का एकवचन धातु ही के समान होताहै। जैसे खोल खोले खोलें आदि जानो *

२ हेतु हेतु मद्भूत से ।

२०६ सामान्यवर्त्तमान—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे क्रमसे हूं है हे हैं हो हैं वर्तमान काल के इन चिह्नों के लगाने से सामान्य वर्तमान की क्रिया बनती है । जैसे खेलता हूं खेलते हैं खाता है खातेहो ॥

२०७ अपूर्ण भूत—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे था के लगाने से अपूर्णभूत काल की क्रिया हो जाती है । जैसे खेलता था खाता था खेलते थे आदि ॥

२०८ संदिग्धवर्त्तमान—हेतुहेतुमद्भूत क्रियाकेआगे लिंग और वचन के अनुसार होना क्रिया का भविष्यत काल के रूप लगाने से संदिग्ध वर्त्तमानकी क्रिया बनतीहै। जैसे खेलता होऊंगा खेलता होवेगा आदि ॥

---

*होना देना और लेना इन तीनों की विधि क्रिया दो रूप से आती हैं। जैसे हो और हो ओ दूं और देउं दो और देओ ले और लेओ आदि कोई २ बोलते और लिखते ॥

२ सामान्यभूत से ॥

२०९ आसन्नभूत—सामान्यभूतकी अकर्मक क्रियासे आगे ये चिन्ह अर्थात हूं है है हैं हो हैं कर्त्ता के वचन और पुरुष के अनुसार लगाने से आसन्नभूत क्रिया बनती है परंतु सकर्मक क्रियासे आगे कर्मके बचन के अनुसार है वा हैं तीनों पुरुष में आता है। जैसे मैं बोला हूं तू बोलाहै मैंने घोड़ा देखाहै मैंने घोड़े देखे हैं तुमने घोड़ा देखाहै तुमने घोड़े देखे हैं इत्यादि ॥

२१० पूर्णभूत—सामान्यभूत क्रियाके आगे था के लगानेसे पूर्णभूत क्रिया हो जाती है। जैसे मैंने खाया था तूने खाया था मैं बोला था तू बोला था आदि ॥

२११ संदिग्धभूत—सामान्यभूत क्रियाके आगे होना इसक्रियाके भविष्यतकाल सम्बन्धी रूपों के लिंग वचनके अनुसार लगानेसे संदिग्धभूत की क्रिया हो जाती है। जैसे मैंने देखाहोगा तूने देखा होगा आदि॥

२१२ चेतरखना चाहिये कि आकारान्त क्रिया में लिंग औरवचन के कारण भेद तो होताहै परंतु पुरुषके कारण विकार नहींहोता। आकारान्त पुल्लिङ्ग क्रिया हो तो एकवचन में ज्यों की त्यों बनी रहेगी परंतु बहुवचन में एकारान्त हो जातीहै स्त्रीलिंग के एकवचनमें ईकारान्त हो जाती है और बहुवचन में सानुनासिक ईकारान्त हो जाती है॥

२१३ यदिआकारान्त क्रियाके साथ आकारान्त सहकारी क्रिया अर्थात था हो तो दोनों में लिंग और वचनका भेद पड़ेगा परंतुस्त्रीलिंग के बहुवचन में केवल इतना बिशेष है कि पिछली क्रिया के अंत्यस्वर के ऊपर सानुनासिक का चिन्ह लगादेना चाहिये ॥

२१४ आकारान्त छोड़ के और जितनी क्रिया हैं उनसभों के रूप दोनों लिंग में ज्यों के त्यों बने रहते हैं उनके लिंगका बोध इसरीति से होता है कि यदि कर्त्ता पुल्लिंग होतो क्रियाभी पुल्लिंग और जोकर्त्ता स्त्रीलिंग हो तो क्रिया भी स्त्रीलिंग समझी जायगी ॥

२१५ नीचे के चक्र में क्रिया के सम्पूर्ण रूपों के अंत्य अक्षर काल लिंगबचन और पुरुष के अनुसार लिखे हैं उन्हें धातुसे लगाकर क्रिया बना लो ॥

		सामान्यभूत				आसन्नभूत				पूर्णभूत			
	पुरुष	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
		पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
व्यंजनान्त धातु	उत्तम	आ	ई	ए	ईं	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
	मध्यम	आ	ई	ए	ईं	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
	अन्य	आ	ई	ए	ईं	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
स्वरान्त धातु	उत्तम	या	ई	ये	ईं	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
	मध्यम	या	ई	ये	ईं	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
	अन्य	या	ई	ये	ईं	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
		हेतुहेतुमद्भूत				सामान्य वर्तमान				अपूर्णभूत			
स्वरान्त वा व्यंजनान्त धातु	उत्तम	ता	ती	ते	तीं	ता हूं	ती हूं	ते हैं	ती हैं	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
	मध्यम	ता	ती	ते	तीं	ता है	ती है	ते हो	ती हो	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
	अन्य	ता	ती	ते	तीं	ता है	ती है	ते हैं	ती हैं	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
		संभाव्यभविष्यत				सामान्यभविष्यत				विधि क्रिया			
	उत्तम	ऊं	ऊं	एं	एं	ऊंगा	ऊंगी	एंगे	एंगी	ऊं	ऊं	एं	एं
	मध्यम	ए	ए	ओ	ओ	एगा	एगी	ओगे	ओगी	(धातु)	(धातु)	ओ	ओ
	अन्य	ए	ए	एं	एं	एगा	एगी	एंगे	एंगी	ए	ए	एं	एं

२१६ अकर्मक क्रिया के धातु दो प्रकार के होते हैं एक स्वरान्त दूसरा व्यंजनान्त। अब उन क्रियाओं का उदाहरण जिनका धातु स्वरान्त होता है होना क्रिया के समस्त रूपों में लिख देते हैं॥

होना क्रिया के मुख्य भाग॥

२१७	धातु	हो
	हेतुहेतुमद्भूत	होता
	सामान्यभूत	हुआ

२१८ पहिले सामान्यभूत और जिनकालोंका क्रिया उससे निकलती है उन्हें लिखते हैं॥

१ सामान्य भूतकाल।

कर्ता—पुल्लिंग

	एकवचन।	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं हुआ	हम हुए
मध्यम ,,	तू हुआ	तुम हुए
अन्य ,,	वह हुआ	वे हुए

कर्ता—स्त्रीलिंग

मैं हुई	हम हुईं
तू हुई	तुम हुईं
वह हुई	वे हुईं

२ पूर्णभूत काल।

कर्ता—पुल्लिंग

मैं हुआ था	हम हुए थे
तू हुआ था	तुम हुए थे
वह हुआ था	वे हुए थे

कर्ता—स्त्रीलिंग

मैं हुई थी	हम हुई थीं
तू हुई थी	तुम हुई थीं
वह हुई थी	वे हुई थीं

३ आसन्नभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिंग

मैं हुआ हूं	हम हुए हैं
तू हुआ है	तुम हुए हो
वह हुआ है	वे हुए हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

मैं हुई हूं	हम हुई हैं
तू हुई है	तुम हुई हो
वह हुई है	वे हुई हैं

४ संदिग्धभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिंग

मैं हुआ होऊंगा	हम हुए होवेंगे
तू हुआ होगा	तुम हुए होगे वा होओगे
वह हुआ होगा	वे हुए होवेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

मैं हुई होऊंगी	हम हुई होवेंगी
तू हुई होगी	तुम हुई होओगी
वह हुई होगी	वे हुई होवेंगी

२१६ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उससे निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिंग

मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

मैं होती	हम होतीं
तू होती	तुम होतीं
वह होती	वे होतीं

२ सामान्य वर्त्तमान काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होता हूं	हम होते हैं
तू होता है	तुम होतेहो
वह होता है	वे होते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं होती हूं	हम होती हैं
तू होती है	तुम होतीहो
वहहोती है	वे होती हैं

३ अपूर्णभूत काल

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होता था	हम होते थे
तू होता था	तुम होते थे
वह होता था	वे होते थे

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

मैं होती थी	हम होती थीं
तू होती थी	तुम होती थीं
वह होतीथी	वे होती थीं

५९० जिन कालों की क्रिया धातुसे निकलती है उन्हें लिखते हैं।

१ विधि क्रिया।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं होऊं	हम होवें
तू हो	तुम होओ
वह होवे	वे होवें
आदरपूर्वक विधि।	परोक्ष विधि।
हूजिये	हूजियो

२ संभाव्यभविष्यत काल ।

कर्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिंग

मैं होऊं	हम होवें
तू होवे	तुम हो वा हो ओ
वह होवे	वे होवें

३ सामान्यभविष्यत काल ।

कर्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होऊंगा	हम होवेंगे
तू होवेगा	तुमहोओगे
वहहोवेगा	वे होवेंगे

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं होऊंगी	हम होवेंगी
तू होवेगी वा होगी	तुम होओगी वा होंगी
वह होवेगी वा होगी	वे होवेंगी वा होंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया ।

होके होकर वा हो करके ॥

२२१ अब उन क्रियाओं का उदाहरण रहना क्रियाके समस्तरूपों में देते है जिनका धातु व्यंजनान्त होता है ॥

रहना क्रिया के मुख्य भाग ।

धातु	रह
हेतुहेतुमद्भूत	रहता
सामान्यभूत	रहा

२२२ सामान्य भूत और जिन कालोंकी क्रिया उस से निकलतीहै उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

कर्ता—पुल्लिङ्ग

एकवचन ।	बहुवचन
मैं रहा	हमरहे

तू रहा	तुम रहे
वह रहा	वे रहे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही	हम रहीं
तू रही	तुम रहीं
वह रही	वे रहीं

२ आसन्न भूत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा हूं	हम रहे हैं
तू रहा है	तुम रहे हो
वह रहाहै	वे रहे हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही हूं	हम रही हैं
तू रही है	तुम रही हो
वह रहीहै	वे रही हैं

३ पूर्णभूतकाल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा था	हम रहे थे
तू रहा था	तुम रहे थे
वह रहा था	वे रहे थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही थी	हम रही थीं
तू रही थी	तुम रही थीं
वह रही थी	वे रही थीं

४ सन्दिग्ध भूतकाल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा होऊंगा	हम रहे होवेंगे वा होंगे
तू रहा होवेगा वा होगा	तुम रहे होओगे वा होगे
वह रहा होवेगा वा होगा	वे रहे होवेंगे वा होंगे